भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 7 | अंक 04 | उदयपुर मंगलवार 01 मार्च 2022 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

तोड़ नहीं, नँह जोड़ है सारंगदे कानोड़

- भेरूसिंह राव 'क्रान्ति'-

स्मृति शेष भेरूसिंह राव के वंशज कानोड़ ठिकाने से जुड़े प्रख्यात कवि रहे। मैंने अपने बालपन में उनसे डिंगल में वीरतापरक शौर्यजनित अनेक छन्द सुने। कानोड़ में हमारे समय में साहित्यसेवी छात्रों का अच्छा जुड़ाव रहा। विपिन जारोली के बाद मेरा भेरूसिंह से सर्वाधिक घनिष्ट जुड़ाव बना। उनका 31 जनवरी 2018 को निधन होने के बाद अब वहां साहित्यिक दृष्टि से सन्नाटा ही है। श्री राव ने अपने समय में यह आलेख मुझे भेजा था जो समय के थपेड़े में कहीं इधर-उधर हो गया। अब अचानक वह मिला जिसे विशेष सम्मान-स्मृति के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। - म. भा.

स्वतंत्रता की रक्षा में महाराणा के पीढ़ी-दर-पीढ़ी सम्बल बने रहे मेवाड़ के सरदारों में झाला, सारंगदेवोत और चूण्डावत सरदारों के कानोड़, सलूम्बर तथा बड़ीसादड़ी के ठिकाने विशेष प्रमुख रहे।

महाराणा लाखा की मृत्यु पर राजमाता हंसाबाई के कहने पर चूंडा महाराणा मोकल के लिए मेवाड़ का राज्य छोड़कर अपने भाई अज्जा के साथ माण्डू के सुलतान के पास चला गया। कानोड़ ठिकाने के सरदार चूंडा के भाई अज्जा के वंशज हैं। रावत इनकी पदवी है। महाराणा कुम्भा ने इन्हें माण्डू से पुन: बुला लिया। अज्जा पुत्र सारंगदेव सारंगदेवोत नामकरण का आदि सरदार है।

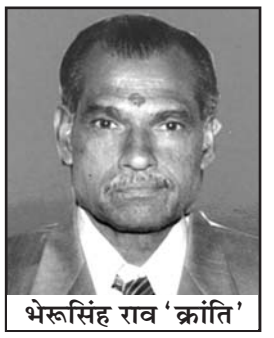

भेरूसिंह राव 'क्रांति'

महाराणा रायमल सन् 1573 ई. के तीन पुत्रों -पृथ्वीराज, जयमल तथा संग्रामसिंह में सारंगदेव का संग्रामसिंह पर विशेष प्रेम था। तीनों भाइयों की लड़ाई में पृथ्वीराज ने संग्रामसिंह पर तलवार का वार किया जिसे सारंगदेव ने अपने सीस पर झेलते हुए संग्रामसिंह की रक्षा की। इस सम्बन्ध में निम्न दोहा प्रसिद्ध है-

पीथल खग हाथां पकड़, वह सांगा किय वार।
सारंग झेले सीस पर, उण वर साम उबार।।

सारंगदेव की अच्छी सेवाओं से प्रसन्न हो महाराणा ने उसे कई लाख की भैंसरोड़गढ़ की जागीर प्रदान की।

एकबार पृथ्वीराज बाठरड़ा मन्दिर में देवी-दर्शन हेतु सारंगदेव को अपने साथ ले गया। वहां धोखे से उसने सारंगदेव की छाती में कटार का वार कर दिया। इस पर सारंगदेव ने पुन: पृथ्वीराज पर तलवार का वार किया पर वह उसे न लग देवी के पाट पर जा लगा। इससे सारंगदेव का वहीं प्राणान्त हो गया। सारंगदेव के इस प्रकार मारे जाने पर महाराणा रायमल ने उसके पुत्र जोगा को बाठरड़ा की जागीर प्रदान कर सन्तोष दिलाया।

रायमल के पश्चात संग्रामसिंह महाराणा बना। उसने सारंगदेव की सेवाओं को उल्लेखनीय मानते उसे मेवल प्रदेश में जागीर दी और सारंगदेव के नाम को चिरस्थायी रखने हेतु उसके वंशज सारंगदेवोत कहलाने की आज्ञा दी। महाराणा सांगा की बाबर के साथ ई. सन् 1527, 13 मार्च को खानवा में युद्ध हुआ। महाराणा की सेना में दो लाख बाईस हजार सवार थे। इसमें रावत जोगा सारंगदेवोत महाराणा की ओर से लड़ता हुआ शहीद हुआ।

गुजरात के सुलतान बहादुरशाह की चित्तौड़ पर दूसरी बार चढ़ाई हुई। उस समय जोगा के उत्तराधिकारी रावत नरबद सारंगदेवोत महाराणा विक्रमादित्य व भाई उदयसिंह को उनके ननिहाल बूंदी भेज दिया तथा देवलिया रावत बाघसिंह को उत्तराधिकारी बनाया। इस युद्ध में पाडलपोल पर लड़ता हुआ रावत नरबद सारंगदेवोत काम आया।

नरबद का उत्तराधिकारी नेतसिंह महान वीर योद्धा था। सन् 1536 में जब महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर बनवीर ने मेवाड़ पर अधिकार कर लिया तब नेतसिंह संकट के समय महाराणा उदयसिंह का संरक्षक रहा। यही नहीं, वह महाराणा के बनवीर के साथ के युद्ध में भी था।

महाराणा उदयसिंह के दिवंगत होने पर उत्तराधिकारी के उठे विवाद में जगमाल को अपदस्थ कर प्रताप को महाराणा बनाने वालों में कृष्णदास, रामशाह आदि के साथ नेतसिंह की प्रमुख भूमिका रही। 18 जून 1576 के हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ अग्रिम पंक्ति में राजराणा बीदा, झालामान, तीनों पुत्रों सहित रामशाह, हकीमखां सूरि के साथ नेतसिंह भी था।

एक जनश्रुति के अनुसार नेतसिंह हर हमले में क्षत-विक्षत हो जाता। उसी समय घावों पर पट्टी बांध पुन: हमला करता तथा शत्रु की वाहिनी को भेदकर आगे बढ़ता। इस तरह उसने सात बार हमले किये। अन्त में जब उसका पूरा शरीर बिखर गया तब वह वीरगति को प्राप्त हुआ।

मेवाड़ पर शाहजादे खुर्रम के आक्रमण के समय नेतसिंह के उत्तराधिकारी रावत भाणसिंह महाराणा अमरसिंह के साथ युद्ध लड़ा। भाण के उत्तराधिकारी रावत मानसिंह सारंगदेवोत को महाराणा राजसिंह ने सेना के साथ डूंगरपुर के इलाकों में भेजा जिससे मेवाड़ से स्वतंत्र हुए सरदारों को पुन: अधीन किया। इसी मानसिंह के साथ 1662 ई. में कुछ सरदारों ने मेवल प्रदेश के सरकश मीणों को परास्त किया। इससे प्रसन्न हो महाराणा ने उन्हें सरोपाव देकर सम्मानित कर मेवल उन्हीं के अधीन कर दिया।

महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय)

औरंगजेब के आक्रमण के समय मानसिंह भी था। रावत मानसिंह का पुत्र महासिंह भी कम योद्धा नहीं था। महाराणा अमरसिंह (द्वितीय) के समय लूट मचाने वाले लखू चणावदा को महासिंह ने ढेर कर दिया। फलस्वरूप महाराणा ने उसे कुराबड़ व गुडली की जागीर प्रदान की।

महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय बांदनवाड़े के पास खारी नदी के किनारे 14 अप्रेल 1711 को महाराणा और रणबाज खां की लड़ाई में महासिंह के गर्दन और बगल का धड़ काट दिये जाने पर भी उसने कटे सिर से सशक्त वार कर रणबाज खां की गर्दन और हाथी का सिर उड़ा दिया।

इस घटना पर कानोड़ महासतिया में महासिंह की पगड़ी के साथ उसकी नौ रानियां सती हुईं। वहां उन नौ रानियों की प्रस्तर प्रतिमा लगी हुई है जिनका मनण (पानी) पीने से महिलाओं की प्रसव पीड़ा दूर होती है। आशिया मानसिंह रचित 'माहव जस प्रकास' में वर्णित यह सोरठा साक्षी है-

तें वाही इक धार, मुगलां रे सिर माहवा।
धज वड हन्दी धार, सात कोस लग सीस वद।।

महासिंह की वीरता से प्रसन्न हो महाराणा ने उसके उत्तराधिकारी रावत सारंगदेव (द्वितीय) को कानोड़ की तथा छोटे भाई सूरतसिंह को बाठरड़े की जागीर दी। इस प्रसंग में मुझ रचित यह छन्द द्रष्टव्य है-

महासिंह रण बांकुरे, कटे सीस कर वार।
रणबाज हू संहारियो, निज खाण्डे री धार।।
विजय मिली मेवाड़ ने, महासिंह रे पाण।
दियो मान सारंग ने, संग्राम महाराण।।
सत्रह सै ग्यारह महं, तिथि अगस्त इकतीस।
पट्टो दियो कानोड़ हु, ल्हार गांव अड़तीस।।

महाराणा संग्रामसिंह ने सन् 1717 में रामपुरे पर अधिकार करने जो सेना भेजी उसमें रावत सारंगदेव शरीक था। सारंगदेव के पुत्र पृथ्वीसिंह ने 11 जनवरी 1734 को मरहठों से युद्ध कर उन्हें मेवाड़ से निकाल दिया।

महाराणा राजसिंह (द्वितीय) के समय 10 जनवरी 1754 में पृथ्वीसिंह के पुत्र रावत जगतसिंह ने मल्हारगढ़ पर आक्रमण कर मरहठों को मार भगाया। महाराणा भीमसिंह के समय 7 जनवरी 1778 को जगतसिंह का उत्तराधिकारी जालिमसिंह हड़क्या खाळ के पास जख्मी हुआ। इस युद्ध में कानोड़ ठिकाने के राव सरदार श्री हरिचंद शहीद हुए। फलस्वरूप उनके ज्येष्ठ पुत्र जेतजी को बलीचागढ़ के पास हमेर ग्राम की जागीर दी गई। इन्हीं हरिचंदजी की छट्ठी पीढ़ी में लेखक भेरूसिंह राव हैं।

कानोड़ ठिकाने के तलवार बंदी नहीं लगती थी। महाराणा सरूपसिंह ने 6 हजार रूपये तलवार बंदी के लिये जिस पर उम्मेदसिंह महाराणा के विरोधी सरदारों में जा मिला। इस पर महाराणा ने उसका मंडप्या गांव जब्त कर लिया। महाराणा शम्भूसिंह ने इसकी जानकारी कर 6 हजार रूपये व मंडप्या गांव पुन: दे दिया।

1857 के सिपाही विद्रोह के कारण नीमच की सेना ने छावनी जला खजाना लूट लिया। तब 40 अंग्रेजों, महिलाओं व बच्चों ने डूंगला में शरण ली। यहां भी उन्हें घेर लिया। महाराणा के रूक्के पर उम्मेदसिंह ने मोहब्बतसिंह को महाराणा की सेना में भेजा। सेना द्वारा अच्छी सेवाओं के लिए महाराणा की ओर से कानोड़ प्रशंसा-पत्र भेजा गया।

निम्बाहेड़ा के हाकिम के बागियों से मिल जाने के कारण उम्मेदसिंह ने अपने भाई बैरीसाल के साथ सेना भेजी। दिनभर की गोलाबारी से मेवाड़ का अधिकार हो गया। इस खुशी में बैरीसाल को उदयपुर बुला घोड़ा, सिरोपाव व मोतियों की कण्ठी देकर सम्मानित किया। उम्मेदसिंह का उत्तराधिकारी नाहरसिंह बाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सेना का मेम्बर रहा। उम्मेदसिंह के संतान नहीं होने से उसके भाई लक्ष्मणसिंह का पुत्र केसरसिंह उत्तराधिकारी बना जो कानोड़ ठिकाने का अन्तिम शासक था।

चार कविताएँ

सम्बंध वटवृक्ष का तानाबाना :
जीवन वटवृक्ष ही तो है
और सम्बंध इसके
ताना-बाना है।
कुछ अज़ीब-सा रिश्ता है
स्वप्न और उम्मीद के बीच
जीवन के शाश्वत सत्य का
अनुभव करता
किसी घोर तपस्वी की तरह
शांत, गंभीर और चिंतनशील
वह लगातार मुस्कुराहता
कई जीवनों का
हरता रहता है दु:ख।
आरम्भ से पहले
सही राह की पहचान
निराशा के
गहन अंधकार में भी
जिंदा रहती है
किसी रहस्यमयी
झील की गहराई में
स्मृतियाँ बन जाती है
बहुआयामी जीवन की
वट वृक्ष की
फैली भुजाओं की तरह।
सम्बंध सिंचित होते रहते
अविरल, अविराम
जो जिंदा रखते हैं
हमारे सपने और
अस्तित्व को।

जब दरकने लगती है संस्कारों की सीमा रेखा :
जीवन के महाभारत में
निरन्तर शोर मचाते
एक सवाल उठता है
मन में बार-बार
जिसका मिलता नहीं
कहीं कोई जवाब।
शकुनि के कुटिल दांव
क्यों हो जाते हैं
हर बार सफ़ल
धृतराष्ट्र की तरह अंधे बने हम
अपने उजड़े दायरों के लिए
मौन क्यों रहें ?
काश!
मेरी आँखें धृतराष्ट्र को
उधार दे दी गई होतीं तो
हिंसा, दमन, एकाधिकार
और हैवानियत का
रास्ता तो नहीं खुलता
दु:शासन की बद्तमीजी
हर बार छिपाई तो नहीं जाती।

आज राह चलते
छेड़ने वालों का अपराध
दिखाई क्यों नहीं देता?
किसी को

हर पल बना तो नहीं रह सकता
'एडजस्ट कर लो' का
मासूम दबाव
जब दरकने लगती है
संस्कारों की सीमारेखा
हम निर्दयताओं से
क्यों नहीं टकरा पाते?
अत्याचार, अन्याय के खिलाफ
क्यों सिर्फ मौन रह जाते
धृतराष्ट्र बने
कब तक आंखें मूंदे रहेंगे!

हरा होता अमरबेल सा दु:ख :
हम भूल गए हैं
रिश्ते बुनना
दिमाग़ ने भी
छोड़ दिया प्रश्न पैदा करना
शब्द भी तो अर्थ खोते जा रहे हैं
धीरे-धीरे सब
क्षरित होते जा रहे हैं
अमर बेल-सा दु:ख
हर दिन हरा होता जा रहा है।
स्मृतियों की घाटियों में
गूंजती है स्वर लहरियां
सुबह की रोशनी
हर दिन, हर पल
ललकारती है मुझे
जीवन संघर्ष के लिए
रिश्तों से मिले विष को
हम जितना पियेंगे
वह उतना ही
अमृत बन कर
हमें जिंदा रखेगा।
दिमाग से सृजित होगी
फिर से सृजन धारा
विध्वंसक बने शब्द
फिर से रचने लगेंगे
आत्म निवेदन का संगीत
गुमसुम चुप्पी
करने लगेगी प्रतीक्षा

सूरज उगने की
जिसकी हर किरण कहेगी -
उठो!
चलो!, बढ़ो!
चरैवेति, चरैवेति!!

मासूम कलियों के साथ व्यभिचार:
निराशा
अंधेरे की ओट में खड़ी है
और लगता है यह रात
जिंदगी से बड़ी है
आज कोई मासूम कली
फिर छली गई है
विकृति!
अपने अहम में फूल गई हो तुम
यही अहम कोढ़ बनकर
फूटता है इस चमन में
कोमल कमल कलियां
कांटों के कैक्टस में बिंध रही हैं
एक - एक कर
मासूम कलियों के साथ
हो रहा यहां व्यभिचार।
लगता है आत्मा के अंधेरे कोनों में
चेतना की लौ कहीं धुंधला गई है
हमारी धमनियों में
अब खून की जगह
नीला पानी बहता है
हम अबोध थे
हमें अहसास होता था कि
कण - कण में ईश्वर है
जो सबका रक्षक है
किंतु यह सपना अब टूट गया
मन का वह भरम छूट गया।
हमे लगा कि
हमारा ईश्वर मर गया है
और मरते-मरते भी
कई परिवारों के सपने
कर गया चकनाचूर
ओ काम पिपासु बुझदिल इंसान
भुला दी तुमने हमी से सीखी थी
जो सभ्यता, जो सहूर
उन मासूमों का क्या दोष था
जिनको मरने से पहले
तुमने मार दिया
अपनी अंधी वासना में
ईश्वर मर गया तो क्या
उन मासूम कलियों के
आंसुओं की चीख
ज्वालामुखी बन फूटेगी एकदिन
और भस्म कर देगी
इन व्यभिचारियों को।

-राजकुमार जैन 'राजन '

ब्रेस्ट कैंसर के केसेस में बढ़ोतरी

उदयपुर (वि.)। राजस्थान में हर साल लगभग एक लाख कैंसर मरीजों का डायग्नोसिस किया जाता है। इनमें से आधे कैंसर के केस मुंह, ब्रेस्ट, यूटरस और फेफड़ों के हैं। कुल कैंसर मरीजों में महिलाए पुरुषों से ज्यादा पीड़ित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ब्रेस्ट कैंसर के केसेस की संख्या बढ़ रही है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार राजस्थानी महिलाओं में से केवल 4.8 प्रतिशत ने ही अपने जीवन में कभी ब्रेस्ट की जांच करवाई है। भारत में ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूकता का स्तर कम है। हालांकि शहरी क्षेत्रों में कुछ जागरूकता कैम्प लगाये जाते हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इस तरह के कैम्प लगभग न के बराबर हैं।

अनंता मेडिकल कॉलेज के डॉ. रोहित रेबेलो ने कहा कि कई ब्रेस्ट कैंसर के मरीजों को महामारी के दौरान कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को इन समस्याओ से ज्यादा दो चार होना पड़ा। उनमें से ज्यादातर फॉलो-अप के लिए हॉस्पिटल में आने से कतराती थी और कई लोगों को हॉस्पिटल पहुंचने में मुश्किल होती थी क्योंकि राज्य की अधिकांश परिवहन सुविधाएं बंद थीं। कोविड ने अनावश्यक रूप से बीमारी को बदतर बना दिया। उन्होंने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर की रोकथाम जल्दी पता लगाने से शुरू होती है। इसे पूरा करने का सबसे आसान तरीका आत्मनिरीक्षण है। एक महिला इसका उपयोग अपने ब्रेस्ट की स्थिति का आकलन करने के लिए कर सकती है और गांठ मौजूद हैं या नहीं, यह वे आत्मनिरीक्षण से पता कर सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि कॉलेज उम्र की महिलाएं इसे लोकप्रिय बनाने के लिए इस प्रक्रिया के बारे में जानें। शुरूआती स्टेज में डायग्नोसिस होना लगभग हमेशा बेहतर होता है, क्योंकि जल्दी पता चलने से मरने से बचने की संभावना बढ़ जाती है। स्कूलों और कॉलेजों में सामुदायिक शिक्षा के माध्यम से ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाना महत्वपूर्ण है। ब्रेस्ट कैंसर के प्रति जागरूकता कक्षा 12 की लड़कियों से शुरू होनी चाहिए और आगे की शिक्षा कॉलेज स्तर पर दी जानी चाहिए।

डॉ. भानावत को कविश्री काग बापू लोक साहित्य सम्मान

लोकसंत मोरारी बापू द्वारा 6 मार्च को
शॉल, सम्मानपत्र तथा 50 हजार की नकद राशि प्रदत्त

उदयपुर (ह.सं.)। पद्मश्री भक्त कवि-दुल्लाभाई भायाभाई काग 'भगत बापू' की 45वीं पुण्यतिथि के आयोजनों की श्रृंखला में 6 मार्च को शीतल संत मोरारी बापू की उपस्थिति में सम्मान समारोह होगा जिसमें राजस्थान उदयपुर के प्रसिद्ध लोक कलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत को कविश्री काग बापू लोक साहित्य सम्मान प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप शाल, स्मृति चिन्ह के साथ ही 50,000 रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जायेगी। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलाधिपति बलवंत राय जानी ने बताया कि समारोह में राष्ट्रसंत-शीतल संत मोरारी बापू के हाथों लोककला के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान करने वाली पांच हस्तियों का सम्मान करने की परम्परा है।

अपना देश अपनी संस्कृति

प्यारजी का घोड़ा

देवी-देवताओं और विशिष्ट व्यक्तियों के घोड़े भी कई दृष्टियों से बड़े अजूबे और करिश्मे वाले रहे। घोड़ों के कारण स्वामी की प्रसिद्धि के उदाहरण भी कई मिलते हैं। चेटक का नाम लेते ही महाराणा प्रताप की स्मृति हो आती है। रामदेवजी, गोगाजी ने अपने घोड़े के माध्यम से ही अपना शौर्य और वीरत्व दर्शाया तथा बहादुरी के साथ लड़ते हुए विजय प्राप्त की। यही कारण है कि उनके भक्त श्रृद्धाभिभूत हो कपड़े -मिटटी के घोड़े चढ़ाते हैं। वे घोड़े भी देवरूप लिये होते हैं। गरासियों में तो घोड़ा बावसी नामक स्थान पर मिट्टी के बने घोड़े-ही-घोड़े चढ़े हुए मिलते हैं।

लोकजीवन में देवताओं और विशिष्ट पुरूषों के साथ-साथ सामान्य लोगों के घोड़ों की चर्चा भी सुनने को मिलती है। घोड़ों के प्रसंग में राष्ट्रसंत गणेशमुनि शास्त्री ने बताया कि गोगुंदा तहसील के वास नामक गांव में प्यारचंदजी ओरड़िया के घोड़े की बड़ी चर्चा सुनने को मिलती है। वह घोड़ा बड़ा स्वामीभक्त था और शकुनी भी था। उसके सहारे प्यारचंदजी को कई मुसीबतों से मुक्ति मिली। कई बार उनके घोड़े ने ऐसे साहसिक कार्य कर दिखाये कि लोगों ने दातों तले उंगलियां दबा ली। वह घोड़ा प्यारजी का घोड़ा नाम से चर्चित है।

एकबार प्यारचन्दजी (70) आंबा (आम वृक्ष से फल) उतारने गये। उस साल (1970) लड़ालूम केर्यां (आम्र फल) उतरी। लौटते वक्त अंधेरा हो गया था। लोगों ने मना किया कि मौसम भी बिगड़ सकता है और पड़ावली नदी का भी कोई भरोसा नहीं है अत: रात वहीं रूक जायें किन्तु प्यारचंदजी नहीं माने। उन्हें अपने घोड़े पर पक्का विश्वास था कि विपरीत परिस्थिति में भी वह साहसपूर्वक सामना कर लेगा।

होनी को कौन टाल सकता है। रास्ते में पड़ने वाली नदी का बहाव अचानक बढ़ गया और मौसम भी सर्वथा प्रतिकूल हो गया। प्यारचन्दजी को अपने घोड़े पर पूरी यकीन थी सो उसे पानी में उतार दिया। नदी का बहाव अचानक तेज हो गया। वह बहाव इतना भयंकर था कि घोड़ा भी डोल गया। उसकी हवा खिसकने लगी किन्तु अपना अप्रतिम शौर्य दिखाते हुए जान को जोखिम में डालकर भी वह पार हो गया लेकिन उस पर सवार प्यारचंदजी अपने को नहीं बचा सके। वे बह गये।

आकुल-व्याकुल परिस्थिति में घोड़ा बड़े उदास मन से घर पहुंचा और शोकाकुल हिनहिनाहट एवं पांवों की अकुलाहट भरी टपटपी से घरवालों को बुलाया। स्वामी के नहीं रहने का संकेत देते हुए उन्हें नदी तक ले गया।

देखते-देखते पूरा गांव प्यारचंदजी के नहीं रहने के शोक में डूब गया। घोड़ा भी रात भर आंसू बहाता रहा। सुबह दो किलोमीटर दूर प्यारचंदजी की लाश मिली। घोड़े की ऐसी समझ, बुद्धिमानी और स्वामीभक्ति की चर्चा वास गांव के साथ -साथ पूरे चौखले में फैल गई। आज भी वहां के लोग प्यारचंदजी और उनके वफादार घोड़े को भूले नहीं हैं।

श्री गणेश मुनि के शिष्य जिनेन्द्र मुनि ने बताया कि प्यारचंदजी ओसवाल वंशीय ओरड़िया गोत्र के बड़े ही धर्मनिष्ठ श्रावक थे। उनके स्वामीभक्त घोड़े की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी। गांव के पास बहती नदी के दूसरे ढावे पर उनका बड़ा जमीदारा था। उसके रखरखाव, निगरानी और फसल की देखभाल के लिए वे हर समय घोड़े की बैठक किये रहते। घोड़ा उनकी हर आहट, इशारा और कथन को समझता था। इसमें वह इतना पटु और पारंगत हो गया था कि जहां भी जाना होता, उसे कहकर राह पकड़ा देते। घोड़ा अपना गंतव्य पकड़े चलता रहता और प्यारचंदजी उस पर बैठे झपकी लेते, ऊंघते रहते निश्चिंत हो जाते। घोड़े की ऐसी स्वामीभक्ति से गांव के सभी लोग सुपरिचित थे।

एक समय कुछ मनचलों ने प्यारचंदजी के साथ बिताने का निश्चय कर घोड़े को बड़ी चतुराई से पीछे फेर दिया। इस पर घोड़ा चलते-चलते पुन: प्यारचंदजी को घर ले गया। उसके रूकने पर जब उन्होंने अपनी आंख खोली तो अपना ही घर पाकर उन्हें अचरज और अफसोस हुआ कि उनका विश्वासपात्र घोड़ा भटक कैसे गया। धीरे-धीरे कुछ दिनों बाद उन्हें शरारती मसखरी करने वालों का पता चला पर वे अपनी सदायशता से मौन ही रहे।

स्मृतियों के शिखर (138) : डॉ. महेन्द्र भानावत

तुलसी ने की मीरां से भेंट और प्रताप को सुनाया राम-भरत-मिलाप प्रसंग

भारतीय साहित्य के विभिन्न कालों में भक्तिकाल सर्वश्रेष्ठ काल रहा है। इस काल में जितने संत-महंत-भक्त तथा ज्ञानी-दानी हुए, अन्य किसी काल में नहीं हुए। उन सबका इतिहास तो दूर सामान्य जानकारी ही हम नहीं ले पाये। यह कार्य अभी भी गुमनामी की अंधेरगर्दी में है। जो संत-भक्त प्रसिद्धि लिये भी रहे उनकी पुख्ता तथा प्रामाणिक जानकारी कहीं किसी के द्वारा शब्दबद्ध नहीं हुई। अभी भी समय है। जैसा घुमक्कड़ी जीवन उन संत-भक्त-साधकों ने व्यतीत किया, उस पथ पर कोई अनुगमन करे तो बहुत सारी कथा-किंवदंतियां, घटना-प्रसंग, याददाश्तें, आमजन के स्मृति-कण्ठों पर आस्था-श्रद्धा-विश्वास की विरासत लिए मिलती हैं।

भक्तिकाल जैसा अन्य काल नहीं :

इस संत साधकों ने अपनी परम चरम आराधना के साथ अपना आत्मकल्याण तो किया ही, अपने पद विहार द्वारा विविध भक्तिस्थलों, तीर्थस्थलों, संगमों तथा मंदिरों में साधना-आराधना के वशीभूत प्रख्यात ऋषि, मुनियों, संतों, महंतों, पुजारियों के प्रत्यक्ष दर्शन, भेंटभेंटावण, ज्ञानचर्चा, सत्संग एवं सान्निध्य से जो कुछ अर्जित किया उसका अधिकांश अनुभव भी यदि कोई चाहे तो उनसे भेंट, मेलमिलाप, आपसी चर्चा, उपदेश-वार्ता तथा सत्संग-व्यवहार से प्राप्त कर सकता है।

भक्तिकाल को इसलिए भी याद किया जाना चाहिये कि इस काल के कुछ तो पहुंचे हुए अन्तर्ज्ञानी आत्मदर्शी थे तो कुछ अपने प्रभु में इतने खोये सुधबुधहीन लवलीन थे कि उन्हें बाह्य अगजग से कोई अधिक लेनादेना नहीं था। कुछ सांसारिक थे जो परसेवा, परहित तथा परसुख के लिए समर्पित थे। उन्होंने मुक्त हस्त से दान देने, उन्मुक्त भाव से गो-सेवा करने तथा समर्पण भाव लिये भूखों को भोजन कराने अन्नपूर्णा के भण्डार खोलने जैसे पारमार्थिक कार्य-कल्पों द्वारा सामाजिकों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की संजीवनी संचरित की।

ऐसे में उन महान साधकों, संत-ज्ञानियों तथा समाज-सुधारकों को कहां फुर्सत थी कि वे अपने विचारों को समय निकालते विधिवत लिखने की चेष्टा करते। उनसे जो भी कथन, विचार, अनुभव, उपदेश, स्तुतियां, वाणियां लोग सुनते उन्हें सोचते, समझते अपने स्मृति-पटल पर संचित किये रहते। इनमें प्रबुद्ध और सामान्य दोनों तरह के लोग होते। वे अपने-अपने रंग-ढंग से उसका लेखा रखते। कुछ लिखते। स्वाभाविक है ऐसे में उसमें बहुत कुछ उनका स्वयं का सोचा, समझा कथन-ज्ञान भी मिलजुलकर उसे व्यवस्थित करता।

जो लेखन अधिक प्रसिद्धि लिये जनचर्चित हुआ, उसका विधिवत संरक्षण होने लगा। लिखने वाले लिपिकार हुए जो अपनी सौंदर्यदृष्टि लिये बहुत ही सुन्दर लिपि में विशिष्ट सज्जा के साथ उन रचनाओं की हस्तलिखित प्रतियां तैयार करते। ऐसे सैंकड़ों ग्रंथ विविध हस्तलिखित ग्रंथ-भण्डारों में सुरक्षित हैं। इनमें छोटे-मोटे अक्षरों में विविध रंगी चित्रात्मक सज्जायुक्त प्रतियां भी मिलती हैं। कुछ तो स्वर्णाक्षरों में चित्रित अलभ्य ही हैं। विविध लिपिकारों द्वारा विविध प्रतियां लिपिबद्ध करने के कारण उनके पाठ-भेद भी मिलते हैं।

यही कारण है कि उस काल के संतों की लिखी कोई सिलसिलेवार प्रामाणिक रचना हमें उपलब्ध नहीं है। बहुत सी प्रतियों में लिपिकारों के नाम तथा लिपिकाल की तिथि के साथ कब किस काल में इनकी लिपि हुई, इसका उल्लेख मिलता है।

मीरां के गुरु रैदास राजस्थान के और डाकोर में तुलसी से भेंट :

मीरां तो रैदास के साथ ही अपने पति भोजराज के निधन के बाद चित्तौड़ से निष्कासित हुई पर यह रैदास काशी वाले नहीं होकर राजस्थान के जोधपुर जिले के पीपलोदा (पीपाड़) के रहने वाले अछूत समझने वाले चर्मकार थे। डाकोर में मीरां ने रैदास को गुरु थरपित किया। गुरु दक्षिणा में रैदास ने मीरां को अपना तंदूरा (इकतारा) दिया तो मीरां ने तुलसीमाला भेंट की।

अपने दीर्घकालीन बयालीस वर्षीय भ्रमणकाल में मीरां अनेक नामचीन संतों से मिली। असंत प्रकृति के संतों से भी उसका पाला पड़ा किन्तु उसकी तीक्ष्ण पहचान-दृष्टि से वह सदैव उनसे जुदा ही रही। उसका सुप्रभाव धीरे-धीरे इतना अधिक व्यापक हुआ कि संजीदा नामी संतों ने मिलकर बैठणी की और सर्व सम्मति से मीरां को 'संत-शिरोमणि' की उपाधि प्रदान की।

मीरां चित्तौड़ से चलकर नीमच, नागदा, रतलाम, थांदला, झाबुआ, रामगढ़, धार, मांडू, उज्जैन होती हुई डाकोर पहुंची। यहीं बलदाऊजी के मंदिर में अवध के एक संत रहा करते थे। गोस्वामी तुलसीदास उनसे रामायण के पन्ने लेने आये तब मीरां की तुलसीदास से भेंट हुई। भेंट के दौरान तुलसी ने मीरां से पूछा- 'आपने राजघराना क्यों छोड़ा?' इस पर मीरां ने प्रतिप्रश्न किया- 'आपने अपना घर क्यों छोड़ा?'

तुलसी को अपनी पत्नी रत्नावली के प्रेम में आसक्त रहने से घर छोडना पड़ा जबकि मीरां को भोज जैसा रक्षक नहीं रहने से अपना गृह त्यागने को विवश होना पड़ा। इस वक्त तुलसीदास रामचरित मानस का एक तिहाई भाग लिख चुके थे और वाल्मीकि रामायण के उन पन्नों की खोज में भटक रहे थे जो इधर-उधर बिखरे पड़े थे।

जब मेरा साक्षात्कार तुलसी से हुआ :

डाकोर के इसी बलदाऊ मन्दिर में प्रात: सेवा काल के समय लोकदेवता कल्लाजी राठौड़ के अनन्य सेवक सरजुदासजी 'बापूजी' के साथ हमारा जाना हुआ। साथ में डॉ. सुधा गुप्ता थीं। मन्दिर के बाहर हम तुलसीदासजी का जिक्र कर यह दोहा उच्चरित कर रहे थे -

चित्रकूट के घाट पर, भई भक्तन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करे रघुवीर।।

मन्दिर के ज्योंही पट खुले, हम भीतर घुसे। वहां एक ओर शिलाखण्ड पर एक हष्टपुष्ट शरीर लिये ऊंचे कद का, गेंहुए वर्ण का व्यक्ति पानी का छींटा दिये केसर के साथ एक बड़े चन्दन का गट्ठा घिस रहा था। उसने घुटनों के ऊंचे तक धोती पहन रखी थी। भाल पर तिलक और गले में माला पहनी हुई थी। मैं उन्हें वहां का पुजारी समझ देखता रहा। हम में से किसी ने उनसे कोई संवाद नहीं किया। मन्दिर दर्शन कर हमने आगे का पथ लिया। बात आई गई हो गई।

अब जब यह प्रसंग लिखने बैठा हूं तो मुझे अचानक कोई जैसे वह स्मृति दे कह रहा है कि वह साक्षात् तुलसीदास गोस्वामी थे। मैंने उदयपुर चेटक चौराहे पर लगी चेटक की विशेष भव्य प्रतिमा का उद्घाटन करने आये मोरारी बापू को देखा, सुना था। मुझे ठीक वही रूप उनका लग रहा था जो तब तुलसी का मैंने देखा था। हां वर्षों के अन्तराल से डीलडौल में बापू का शरीर तुलसी की तुलना में कमतर लगा।

तुलसी-मीरां के बीच पत्राचार भी हुआ। पत्र बहुत ही संक्षिप्त होते थे। पहला पत्र तो पद्य में ही लिखा गया। पत्रों का यह आदान-प्रदान संतों द्वारा होता था। तुलसी ने डाकोर में भेंट के दौरान मीरां से द्वारिका में मिलने का वादा किया था। तदनुसार वे द्वारिका पहुंचे भी परन्तु उनके पहुंचने से पूर्व ही मीरां समुद्र-समर्पण कर चुकी थी। इससे तुलसी को बड़ा पछतावा रहा।

द्वारिका में तुलसी की राम रट :

तुलसी यहां आ तो गये, मगर रामभक्ति उनकी बराबर बनी रही। जहां सभी लोग 'कृष्ण-कृष्ण' की रट लगाते, वहां तुलसी 'राम-राम' की रट लगाते रहे। द्वारिकाधीश मंदिर की सीढियां चढ़ते समय भी जब उनके मुख से लोगों ने 'राम-राम' की ही रट सुनी तो उनको अन्दर प्रवेश करने से रोक दिया गया। तुलसी तब दिन भर सीढियों पर ही बैठे रहे, परन्तु राम नाम को नहीं छोड़ा। अंत में पंडों को दया आई तो उन्हें प्रवेश दे दिया गया।

तुलसी प्रवेश तो पा गये, परन्तु वे दर्शन भी कृष्ण की बजाय राम के ही करना चाहते थे। उन्होंने वहां कहा भी कि मैं ऐसे जटाजूट राम के दर्शन करना चाहूंगा जिनके हाथ में धनुष-बाण हो।

कहते हैं, सच्चे भक्त की जिद्द भी भगवान पूरी करते हैं। तब देखते-देखते कृष्ण-मूर्ति का सारा शृंगार उतर गया और राम के जिस स्वरूप के तुलसी दर्शन करना चाहते थे, उस स्वरूप के उन्हें दर्शन हो गये। मंदिर में मूर्ति के सम्मुख, जहां बैठकर तुलसी ने अपने राम के दर्शन किये, वह स्थान आज भी 'गुसांईजी की बैठक' के नाम से उनकी याद लिये हुए है। यहां बैठ तुलसी ने रामचरित मानस की कई चौपाइयां भी लिखीं।

तुलसी ने अयोध्या में सरयू नदी के किनारे अपना शरीर त्यागा। उनके साथ जो संत रहते थे वे बाद में उनकी अस्थियां काशी ले गये और गंगा के असी घाट पर प्रवाहित करदीं।

तुलसी ने प्रताप को राम-भरत-मिलाप प्रसंग सुनाया :

यही नहीं, तुलसी ने तो मेवाड़ में आकर स्वतंत्रता के प्रतापी योद्धा, अपनी आन पर अडिग रहने वाले, अकबर जैसे महान मुगल सम्राट से लोहा लेना मंजूर कर उसकी अधीनता स्वीकार नहीं करने वाले यश:पूत महाराणा प्रताप से भी भेंट की। यह एक ऐसा ऐतिहासिक घटना प्रसंग है जिसका उल्लेख कहीं इतिहास में कलमबद्ध नहीं मिलता। मेवाड़ के घुमावदार चक्कर देते मगरे-मगरियों और गन्नाटे देती घाटियों के बीच गफलत देती गुमनाम गुफा तक पहुंचने वाले तुलसीदास को देखकर सैनिक सहम गया। कडक़ती आवाज में बाहर ही रोक दिया गया और भीतर जाकर अन्नदाता से निवेदन किया- 'हुजूर, लगने को तो कोई बड़ा तेजस्वी पुरूष लगता है परन्तु वह यहां क्या करने आया है। कोई गुप्तचर भी हो सकता है। वह अपना नाम संत तुलसीदास बता रहा है।'

युग के महान कवि संत तुलसी का नाम सुनते ही महाराणा प्रताप दौड़ पड़े। निगाहें नीची झुकी हुई देख तुलसी ने प्रताप को अपनी भुजाओं में भर हिरदे से लगा लिया। बोले- 'आप मेरे आराध्य देव राम के यशस्वी वंशज हैं। आदेश दें। आपके राष्ट्रीय महासमर में मेरा क्या योगदान हो सकता है? रानी ने पूजा का थाल लिए संत प्रवर की आरती उतारी और राजकुमार अमरसिंह ने शीतल जल से पांव पखारे।

तुलसी ने तब अपना आशीर्वाद देते प्रतापी परिवार को अपने रामचरित मानस से राम-भरत-मिलाप का प्रसंग सुनाकर पूरे सघन वन को अश्रु विगलित कर दिया। उसमें राम के अश्रु भरत के तथा भरत के अश्रु राम के वक्षस्थल को प्रेम की पीड़ से सहला रहे हैं। यह सुन प्रताप का गला रूंध गया। बोले - 'आपने मेरी आंखें खोलदीं। अब यह भाला मानसिंह के विरूद्ध नहीं उठेगा।'

तुलसीदास ने अपने पास रखा हीरा नजर करते वहां से विदा ली। आगरा पहुंचकर कविवर रहीम से सारा हाल कह सुनाया। भरत-मिलाप का वही प्रसंग उसी बुलंदगी से सुनाया तब रहीम के साथ-साथ मानसिंह की आंखें भी सजल हो उठीं। वे बोले, 'अब मेरी तलवार किसी जातीय बंधु पर नहीं उठेगी।'

मोरारी बापू तुलसी के अवतरण :

रामकथा के विश्वख्यात विवेचक और विश्लेषक कथा-विशारद-मनीषी मोरारी बापू तो मेवाड़ की धरा को कई बार अपना यादगार स्पर्श दे चुके हैं। उनसे जिसने भी भेंट की और रामकथा सुनी उनमें उसने महात्मा तुलसीदास का ही हमरूप, हमतुलसी अंशात्मा का दर्शन पाया है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, मंगलवार 01 मार्च 2022

सम्पादकीय

हवाएं देतीं त्यौहार की आहट

सृष्टि संचार में हवाओं का बड़ा महत्त्व है। इन हवाओं के साथ ऋतुचक्र बंधा हुआ है। इसी चक्र के आधार पर षट् ऋतुओं का निर्माण हुआ है। जैसे छहों ऋतुचक्र अपनी जुदा-जुदा उपस्थिति देते हैं वैसे ही उनसे जुड़ा हवामण्डल उनके आगमन की आहट देता प्रतीत होता है। हवाओं की चाल, बहाव और स्पर्श भी बहुत कुछ संकेत देता है।

ग्रामीणजनों की हवामण्डल को पहचान, प्रकृति का सर्वानुमान लेने और तदनुसार अपना जीवन आचरित करने की अच्छी पकड़ है। प्रकृति में विचरण करने वाले प्राणी तो इसी वातावरण के साथ अपना बसेरा करने, सुरक्षित जीवन जीने की समय-शक्ति रखते हैं। कई पक्षियों, पशुओं तथा जलचर जीवों की वाणी और व्यवहार मौसमी हवाओं के साथ जुदा होने से इसकी भनक वे मानवों को भी देते रहते हैं।

कोयल का कण्ठ-स्वर, मोर का नृत्याभिनय, भंवरे का गुंजन, तितली की उन्मुक्त उड़ान, मधुमक्खी का विविध भांति फुलवारी दर्शन, कमल-कमलिनी का पूर्ण खिलन, मेढ़क की टर्र-टर्र, चिड़ियों की चहलकदमी, पपीहा की बोली, जलजीवों की रंगरैलियां सब कहीं मौसमानुकूल अनुशासित हैं।

शहरों में कहां प्रकृति-पुरुष मिलेगा जो प्रकृति से तादात्म्य रखता हो? यहां तो प्रकृति भी बांध दी गई लगती है। गांवों में हवाओं के विविध नाम, काम, उनके दर्शनों की अभिलाषी ग्रामीण जनता भी पूरी तरह उनके साथ मौसम बिहारी बनी लगती है।

सबके जुदा-जुदा गीत हैं। उन गीतों के बल पर उनका आगमन स्वागतेय होता है। खेतों में, हर फसलों में उनकी प्रतीती, उपस्थिति, अंकुरण और पूर्ण यौवन की दर्शना जो सुख देती है वह तो वहीं कल्पनातीत हुआ निहारा जा सकता है।

ऐसे लोकगीतों में भी कई संकलन निकले हैं जिनके अध्ययन से अभूतपूर्व हमारी ग्राम्य-संस्कृति के लोकाचारों का दिग्दर्शन मिलता है। ये गीत विरह को शान्त करते हैं। प्रियमिलन का सुख देते हैं। परदेश रह रहे प्रियतम को पाती भेजकर सन्देश देने का संतोष देते हैं। मन की दमित भावनाओं का इजहार कर हल्कापन देते सुखानन्द देते हैं। उदहरण-

(1) रूत आई रे पपीहा थारे बोलण री रूत आई रे।
(2) गायां चरावती गोरबंद गूंथियो,
भैंस्या चरावती पोयो-पोयो राज
म्हारो गोरबंद नखराळो।
(3) म्हारे छैल भंवर रो कांगसियो पणहार्यां ले गई रे
(4) म्हैं तो भूली हो बालीदा आपरी सेज मां
म्हारो गेंद गजरो।
(5) म्हारी मेहंदी रो रंग सुरंग
प्रेम रस मेहंदी राचणी।
(6) बादली बरसे क्यूं नी, बीजली चमके क्यूं नी ए
म्हारे भंवर सा रे हवाम्हेल में चंपो सूखे ए
(7) ओ म्हारा मांणीगर
गोरी ने मोलाइदीजो पोमचियो जी राज।
(8) केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस
(9) खड़ी नीम के नीचे म्हैं तो एकली
जातोड़े बटाऊ म्हांने ओळेदोळे देख ली
(10) बनो तो म्हारो रामचनद्र अवतार
बनी तो म्हारी सीता जानकी।

शब्द रंजन--- ज्ञान रंजन और बहु रंजन भी

शब्द रंजन केवल शब्दों का रंजन ही नहीं, सरस्वती का अनुरंजन भी है। अपने प्रतिष्ठान तथा प्रियजनों की स्मृति निमित्त विज्ञापन सहयोग करें।

मुख पृष्ठ	10,000/- रूपये
अंतिम पृष्ठ	7000/- रूपये
साधारण पृष्ठ	5000/- रूपये
आधा पृष्ठ	3000/- रूपये
चौथाई पृष्ठ	2000/- रूपये

सदस्यता शुल्क :

संरक्षक	11000/- रूपये
विशिष्ट सदस्य	5000/- रूपये
आजीवन सदस्य	3000/- रूपये
शब्द रंजन के सहयात्री	1500/- रूपये
साहित्यिक चौपाल	1000/- रूपये
वार्षिक संस्थागत	500/- रूपये
वार्षिक व्यक्तिगत	300/- रूपये

Shabd Ranjan, UCO BANK,
Bhupalpura Branch, Udaipur,
a/c no. 18450210000908,
IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c

सुविधा और सुरक्षित प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं, समाचार एवं विज्ञापन आदि ई-मेल shabdranjanudr@gmail.com पर भेजें।

सवा लाख री लूंब गम गई इडोणी

- डॉ. देवदत्त शर्मा -

ईण्डी जितनी कलात्मक और चमकदार होगी उतनी ही अधिक ठसकेदार उसकी चाल होगी। बिना ईण्डी की मदद से पणिहारी पनघट से पानी ला ही नहीं सकती। ईण्डी सूत, मूंज अथवा नारियल की पतली रस्सी से बनी हुई होती है। इसकी आकृति गोल घेरेनुमा होती है। पणिहारी इसे अपने सिर पर रख उस पर मटकी रखती है। मटकी का पेंदा इस पर अच्छी तरह टिक जाता है और वह सिर से फिसलती नहीं है। कुंआरी लड़कियां मूंज अथवा सूत की पतली रस्सी से बनी सादा ईण्डी प्रयोग में लेती हैं। प्रौढ़ा स्त्री मध्यम प्रकार की ईण्डी प्रयोग में लेती है जबकि नव-विवाहित स्त्रियां झल्लरदार, सितारों एवं कांच से जड़ी जालीदार मन की कोमल कल्पनाओं से बुनी ईण्डी का प्रयोग करती हैं।

गोटा-किनारी से दमकता और सितारों से जड़ित लहंगा-ओढ़नी पहनकर अथवा झिलमिल करता पीला-पोमचा ओढ़कर जब कोई नई-नवेली पानी भरने जाती है तो वह पनघट का आकर्षक तो बन ही जाती है, उसकी ठसक से मनचले देवर-युवकों का भी मन दरक-दरक जाता है। यह ठसक इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसकी ईण्डी कैसी है? ईण्डी जितनी कलात्मक और चमकदार होगी उतनी ही अधिक ठसकेदार उसकी चाल होगी। बिना ईण्डी की मदद से पणिहारी पनघट से पानी ला ही नहीं सकती।

ईण्डी एक प्रकार का साधन है जो पनघट से पानी लाने के लिए पणिहारी के काम आता है। यह सूत, मूंज अथवा नारियल की पतली रस्सी से बनी हुई होती है। इसकी आकृति गोल घेरेनुमा होती है। पणिहारी इसे अपने सिर पर रख उस पर मटकी रखती है। मटकी का पेंदा इस पर अच्छी तरह टिक जाता है और वह सिर से फिसलती नहीं है।

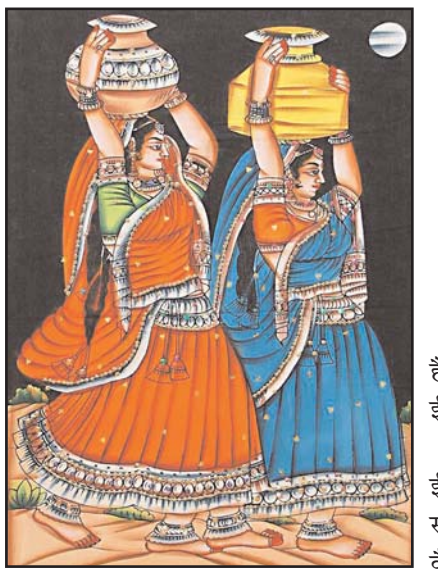

ईण्डी की बनाई की अलग-अलग तकनीक होती है। कुंआरी लड़कियां मूंज अथवा सूत की पतली रस्सी से बनी सादा ईण्डी प्रयोग में लेती हैं। प्रौढ़ा स्त्री मध्यम प्रकार की ईण्डी प्रयोग में लेती है जबकि नव-विवाहित स्त्रियां झल्लरदार, सितारों एवं कांच से जड़ी जालीदार मन की कोमल कल्पनाओं से बुनी ईण्डी का प्रयोग करती हैं। सामान्यतया वे इस तरह की ईण्डी अपने हाथों से ही बनाती हैं। इस ईण्डी को कलात्मक स्वरूप प्रदान करने में सखियों का बड़ा योगदान रहता है। एक लोकगीत में कहा गया है-

टोकणी पीतळ की, दिल्ली सैं मोत्या मंगाई
ईण्डी तो मेरी जाणिन की, सखियों नै बैठ बणाई
ईण्डी तो धर पाणी नै गई, वैठ्ये झुक रह्या लोग-लुगाई
सास जेगड़ तार लियो, मेरे चढ़ि आयो ताव-निवाई
बहू तोय बरज रही, मत घालै सुरमो स्याही
सास मेरो दोष नहीं, दुनियां नै रीत चलाई
ईण्डी तो मेरी कांचन की, मैं ओढ़-पहर पाणी ल्याई
पाणी तो भर घर आई, वहां बैठ्यो जेठ सिपाही।

अर्थात् - बहू कहती है, मैंने पानी भरने के लिए दिल्ली से पीतल की टोकणी मंगाई और जब मैं पूरे श्रृंगार के साथ सखियों के सहयोग से निर्मित जालीदार ईण्डी को सिर पर रखकर पानी भरने गई तो उसे देखने के लिए स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गए।

परिणाम यह होता है कि लोगों की उसे नजर लग जाती है और उसे बुखार चढ़ आता है। वह पानी भरकर घर आती है जहां उसका जेठ बैठा हुआ है। वह अपनी सास से कहती है, वह उसके सिर से जेगड़ (ऊपर-नीचे रखे दो छोटे-बड़े मटके) उतारले। उसे बुखार चढ़ आया है। सास कहती है, मैं तो पहले ही मना कर रही थी कि आंखों में काजल डालकर पूरे श्रृंगार के साथ वहां मत जाना। इस पर बहू जवाब देती है, इसमें मेरा दोष नहीं है सासूजी, श्रृंगार का यह विधान तो पहले से ही प्रचलित है।

एक समय कलात्मक और हीरे-मोती जड़ी बहुमूल्य ईण्डी गुम हो जाती है। ऐसी स्थिति में बहू को मानसिक यंत्रणा झेलनी पड़ती है। उसका इस लोकगीत में बड़ा ही मनोहारी वर्णन मिलता है-

म्हारी सवा लाख री लूंब, गम गई ईडूणी
म्हारी माऊजी बणाई इडूणी, म्हारी मासीजी कात्यो सूत
गम गई इडूणी।
मोतीड़ा जड़ी म्हारी इडूणी, कोई हीरा जड़्यो म्हारो सूत
गम गई इडूणी।
ई ईडूणी रै कारणै म्हारी नणदल नाते जाए
म्हैं और बणास्यां ईडूणी, म्हैं और कातस्यां सूत
गम गई इडूणी।
मोतीड़ा जड़ास्यां ईडूणी म्हैं हीरा जड़ास्यां सूत
गम गई ईडूणी।
ईडूणी रै कारणै म्हारी सासू बोलै बोल
गम गई ईडूणी।

किन्तु समय के साथ गांवों में जो बदलाव आया है उससे न केवल पनघट सूने होते जा रहे हैं बल्कि ईण्डी की कला भी नष्ट होती जा रही है।

स्थान-भेद के कारण राजस्थान में ही ईडोणी को ईण्डी, चूमली जैसे नामों से पुकारा जाता है। इस सम्बन्धी गाये जाने वाले गीतों में भी उसी तरह का वैविध्य मिलता है। शिक्षालयों में ईडोणी गीतों पर नृत्य प्रतियोगिताएं भी देखने को मिलती हैं।

विवाह में चाक नूतने की रस्म में घर की मुख्य महिलाएं कुम्हार के घर जाकर चाक के कुंकुम का सातिया कर एकी की संख्या में पतासी रख कलश, चकल्या और बिजोरा की सेट के तीन माटी के बर्तन रख गाजे-बाजे के साथ गीत गाती आती हैं और गणेशजी के स्थापना स्थल पर रखती हैं। इनके नीचे की चूमली बड़ी ही जड़ाव जड़ी कलात्मक होती है जो सबको आकर्षित किये रहती है।

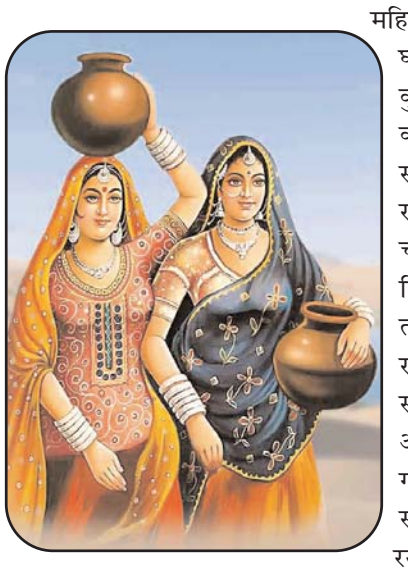

करज रो कर्‌यावर

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

(यह एकांकी भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर द्वारा आयोजित राजस्थान के लोककलाकारों के प्रशिक्षण शिविर में कलाकारों के मंचनार्थ लिखा गया था। राजस्थान विकास विभाग के अर्थ सहयोग से उदयपुर के सन्निकट बेदला गांव के राव मनोहरसिंहजी के रावले में जुलाई-अगस्त 1958 में पंद्रह-पंद्रह दिन के चार शिविरों का संयोजन स्वयं लेखक की देखरेख में कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर के नेतृत्व में किया गया था।)

परबात री वेरां, कूकड़ो बोलवारी। हेमो आपणी झोंपड़ी बारणे एकलो बेठो-बेठो चलम पीर्‌यो है। वंडे भड़े नानी-सी मचली पड़ी है जंडे पर वंडो लाड़लो बेटो लाल्यो हूतो है। वंडी वऊ वंडे घर में घट्‌टी फेरी री है। हेमे दो-तीन चलम रा कस खेंच्या। अतराक में वंडे सेठजी आई धमक्या। वोराजी ने देखतांई हेमो बोल्यो-

हेमो - जैरामजी री वोराजी। लो अरमा पधारो (मचली खेंचतो थको) आज अठ्‌ये कठ्‌ये गेलो भूलीग्या। के तो आंतरे- पांतरे नीं तो तीन-तीन चार-चार दनूं दरसण दी जाता ने के जो पन्दरा वी-वी दन वेणा आईग्या, अठ्‌यें फरकी जोवारो काम नीं। थोड़ीघणी तो मांणे पर भी मेरबानी राख्यां करो वोराजी। असी कई वात जाणी तो कोई नीं जो थां अतरा बेरागी वेईग्या ओर आवणोई छोड़ी दीधो। के तो अतरी मो मरजी राखता हा, आवता-जावता रेता हा ने के जो मांणे इस्या भूल्या के हमारवारोई काम नीं।

वोराजी - हेमा, थने कई वताऊं, आजकाल मूं पया-पया रो मोताज वेइर्‌यो हूं। छोरा रे भणवारी किताबां लावणी। इसकूल री फीस जमा करावणी। वंडे पेरवारा गाबा हींवावणा। छोरा री बाई रे गेणांगांटा करावणा।

छोरी ने पनावणी अर नीजाणे कतराई लापालोंदा लारे लागीर्‌या है अर थें जो नानपणो आदरी लीधो। कतरी दाण हमचार केवाई-केवाई ने थाको। के तो हेलाहांटे ही आईजातो ने के जो फरकी जोवारो काम नीं। आखर थारी नीत कई है। देवारी है के नी देवारी। साफ-साफ केइदे। नी देवारी है तो कई वात नी, यूं ई हमझूंगां के रीपा कूड़ा में पड़ीग्या। और तो कई करूं। कतरी दाण थारो माजनो पाड्‌यो पर थारे कई आल नी आयो, नागा रो नाक काट्‌यो ने हवागज वध्यो जणीवारो तोल करी मेल्यो थें तो।

हेमो - वोराजी, थांणे कई कूं अबे। आज दस दन वेईग्या, लाल्यो हेंगपाट मांदो पड़्यो। खाणो-पीणो सब भूलीग्यो। आंख खोलवारो कामनीं। हूकी-हूकी ने दन-दन कांगी वेईर्‌यो। हमझताबुझता ने बतायो। दवादारू कीधी। आज अठे, काले वठे, आज अठे, काले वठे दोड़ी-दोड़ी ने मारे पगां रो पाणी वेईग्यो।

वी-ती रीपा खरच कीधा पण अंडे रत्ती भर फरक नी पड़्यो। आज आखी रात रोवतां-रोवतां वीतीगी, अबणुं परबात री वेरां नामिक अंडी आंख मली जो मली। मनेई नींद नीं आवे आखी रात। वोराजी, थांणा होगन खाइने कूं मने घणो फिकर लागे थाणे करजा रो पर कई करी सकूं। आज हात दन वेईग्या हात हलावा तक रो काम नीं।

वोरोजी - हाजमांद-हाजमांद तो कुदरत रो नियेम है। जो वेणो है वो तो वेइने रेगाईज। होणहार कधी टरवारी नीं। पण मनेई खावा ने चावे के नीं चावे। अबे थांरापांऊं न्याव कराऊं। आज दस-दस मीना वेवा आया, मूल री तो आंख बंदाणी ब्याजरोई पतोनीं। वगत पड़्यां मांणो पयो जदी मांणे नीं काम आवे तो पछे कई काम रो यो पयो।

मारे अंडी धूप थोड़ी देणी जो आज नीं तो काले देई दूंगा। काले नीं तो परमके दन देई दूंगा। हाऊ जाणी ने थने रीपा दीधा। थारो विसवास कीधो। वगत पड़्यां थारो काम काड़्यो। थने एकऊं दूजो नीं जाण्यो जंडा फल इव्या के थूं आज मांने दस हुणाइर्‌यो। मने चकमो देइर्‌यो। साहूकार वणी ने वातां करीर्‌यो। ले जावारी गरज ही जदी तो मीठो-मीठो बोली ने लेइग्यो ने अबे देवारी वगत अंगोठो वताई दीधो। धूर पड़्या थारा जीवण ने। मारा अतराक रीपा नीं देवाऊं थारो टापरो ऊंचो वेइजागा, असी तो वात है नीं। भगवान हेलो हुण्यो तो थेन अंडो फल परो मलेगा।

हेमो - राम-राम, राम-राम, या कई वात कीधी वोराजी। अतरा कई रूसाणा वेइग्या। अतरो कई घुस्सो आइग्यो। भगवान चायो तो आज मारो लाल्यो हाऊ वेइजा अर हवेरे थाणा रीपा ने थाणो चुगतो ब्याज परोदूं। असी कई वात कीधी। थाणा रीपा मूं भूखो रेइने भी दूंगा पर परादूंगा। एक नवो पयो नीं राखूं थाणो। थां अणी वात रो कतई होच मती करजो।

वोराजी - ठीक है, अतरा दन थारी तास देखी तो दो दन ओर सही। पछे देखूं, मनक री जबानूं क्यो के लगाई री जबानूं। मैं तो अतरा दन थारो ल्याज देख्यो नीं तो दावापुरी करीने वसूलनी कीधावेता। घणो थने कई कूं, असल मरद वेगा तो हमजीजागा। नीं तो पछे आपोआप ठकाणे आवी। पर याद राखजे, मरतां दमतक थारो केड़ो नीं छोडूंगा। अतरो केताईं ने वो जावे ने एक पठाण ने वने धमकी देवा हारूं बलाई लावे। (पुलिस रा भेख में पठाण आवे।)

पठाण - क्यों बे हेम्ये! सेठजी के साथ क्या मखोलबाजी कर रखी है। सीधी तरह क्यों नहीं ब्याज चुकाता है। क्यों नहीं सेठजी का हिसाब कर देता है!

हेमो - पधारो! पधारो! मजरो होकम।

पठाण - मजरोवजरो कुछ नहीं। ये मजरावजरा किसी ओर को करना। मैंने जो कहा, सुना के नहीं सुना।

हेमा - हुणी लीधो बावजी! पण अणी वगत मारी हालत अतरा रीपा तो कई एक ढींगलो देवारी नीं। अबे आप को जो करूं। आप को तो नवो नामो मांडी दूं। बाकी बात या है के पन्दरा दन वेगा या मोड़ा, आपरी रकम तो मने चुकावणीज है। आपरा रीपा खाइने मरी जाऊंगा या कठे भागी जाऊं, असी भी वात नीं है सेठजी। आप धीरज राखो।

वोराजी - थारो ल्याज देखतां-देखतां घणा मीना वेइग्या। आज दूं, काले दूं, आज दूं, काले दूं करतां-करतां यो पूरे वरस वेवा आइग्यो। मारा रीपा कई धरमादे तो आया नीं जो मूं थूं नचावे जूं नाचूं। अबे तो योई इलाज है के दावापारी करीने थारा र्‌यास्या घर, खेत परा लीलाम कराऊं ने थने जेल री हवा खवाऊं।

हेमा - अरे अन्दाता! या कई वात कीधी। मारे मोटा छोरा रा होगन, थाणो ब्याज ने रीपा पन्दरा दन में परा चुकाऊंगा। अतरा दन ढब्या तो पन्दरा दन ओर ढबी जावो सेठजी। हेलहांटे मूं मार्‌यो जाऊंगा। सब कर्‌या कराया पर मारे पाणी फरी जागा। गाम-गाम या वात पोंचेगा तो मारो हाउनी लागेगा। दादी री आतमा भी दुख पावेगा और हींगहाटे हानो वगड़ी जागा। अणी वास्ते आप बणु पधारो। मूं खुद ही आपरी हवेली हाजिर वेऊंगा।

पठाण - (सेठजी से) सेठजी! अब क्या देरदार है। कब तक इसकी रामायण सुनते रहोगे। मीठा-मीठा बोल-बोल कर साले ने सबको परेशान कर रखा है। मैं तो यही कहता हूं कि इसे हथकड़ियें पहना कर जेल ले जाया जाय। वहीं इसकी तबीयत दुरस्त होगी। पड़ा-पड़ा वहीं मरेगा और सात जनम तक छूट नी पायेगा साला।

वोराजी - ठीक है! जिस्या अणी करम कीधा वीस्यो ही अने फल मलेगा। करम गति टारत नांहिं टरे। अंडा करम अने जेल भुगतावारा है ओर आपी यदि वंडे माफक काम नीं कीधो तो यो हंगरो पाप आपणे माथे। पठाण सा, अबे देरी मत करो। घणी देर वेइगी अंडे मुंडा आगे माथो खपावतां-खपावतां।

पठाण - तो चल! साला कमबख्त कहीं का।

(हेमा थर-थर कांपने लग जाता है। दोल्या, लाल्या, दोल्या .... आदि जोर-जोर से पुकारता है। इतने में एक नेताजी का आगमन होता है।)

वोराजी - (उठकर) आओ पधारो, वीरजी सा.....

नेता - अरे! यह क्या! इतना रोना पीटना क्यों हो रहा है। क्यों सेठजी! क्या बात हुई। क्यों पठान साहब! इसके क्या हो गया।

(सेठजी घबरा जाते हैं)

पठाण - पता नहीं क्या हो गया इसे, अभी-अभी तो बड़ी लंबी-चौड़ी बातें बना रहा था। बिल्कुल दुरस्त तबीयत थी इसकी। अचानक यह कौनसी बीमारी लग गई इसको।

वोराजी - आज दस दन वेवा ने आया, अंडो लाल्यो माचा परूं उठ्‌यो तगात नीं। आज यो भी .... हे भगवान, थारा राज में या कई पोल। यो कई अंधारो।

नेताजी - उसे शांति से सुलादो अभी थोड़ी देर के लिए। (बैठकर, सेठजी से) कहिये सेठजी! आपका कैसे आना हुआ यहां।

वोराजी - मारो तो यो गांवड़ो है सा। हेमो मारो आसामी है। बणु मीनो खाण को थोड़ो घर रो काम हो। सगासमध्यां री, ब्याव सादी में परोग्यो। मारी खुद री छोरी रो अबे ब्याव है, अणी वास्ते हेमा भाई पाऊं थोड़ा घणा रीपा जी ब्याजणा देई मेल्या है, लेवा आयो।

नेताजी - कितने रूपये?

वोराजी - पांच सौ।

नेताजी - पांच सौ?

वोराजी - हां सा, पांच सौ।

नेताजी - और....

वोराजी - और मामूली ब्याज।

नेताजी - मामूली कितना?

वोराजी - दस-ग्यारा मीना रो....

नेताजी - अरे भाई! महिना वहिना कौन पूछ रहा है। मैं तो सीधा सा पूछ रहा हूं कि कुल कितना ब्याज हुआ और तुम महिने बता रहे हो। आश्चर्य....

वोराजी - मीना रा पंदरा रे हिसाबूं और वणी ब्याज पर पाछो अतरा मीना रो ब्याज।

नेताजी - ब्याज पर ब्याज! (हंसकर) इतना हजम हो जाता है। हमको तो इतना ब्याज भी हजम नहीं होता। (फिर हंसता है)

(पठाण से) ओर पठाण साहब! आपका कैसे पधारना हुआ?

पठाण - मैं तो यों ही घूमता घामता जा रहा था। ये सेठजी यहां बैठे मिल गये। सोचा दो मिनिट बीड़ी पी लूं। सेठजी से मिलना भी हो जायेगा और विश्राम भी।

(इतने में किसान उठ बैठता है, और खड़ा होकर नेताजी से मुजरा करता है।)

नेताजी - कहो भाई हेमाजी! तबीयत तो ठीक है न! अभी क्या हो गया था?

हेमा - कई नी व्यो होकम.... सब आपरी मेरबाणी है।

नेताजी - फिर भी कुछ-न-कुछ तो हुआ। आखिर बात क्या हुई।

हेमा - होकम! ई सेठजी ने ई पठाण सा कणी परबात रा अठे आया। सेठजी मा पाऊं रीपा मांगे। मैं बणुं अणी वगत देवा हारूं मना करी दीधो। सेठजी मान्या कोइनी। पठाण सा ने क्यो मने जेल में लेजावावास्ते। पठाण सा मारो बांगटो पकड्‌यो ओर जोरूं मने हलायो। आज दस दन वेइग्या, रोटी खादा ने, नींद काड्‌या ने मने। मारो छोरो मांदो पड्‌यो। (रोता है)

नेताजी - (सेठजी से) क्यों सेठजी! सुना हेमा क्या कह रहा है?

(पठाण से) और पठाण सा. आप तो कहते थे कि मैं तो केवल सेठजी से मिलने आया। क्या अधिकार था आपको इसे दस बातें सुनाने का! पकड़कर लथेड़ने का! और जेल में रखने की डांट बताने का! क्या आप सरकारी पुलिस हैं? जाइये! अपना रास्ता लीजिये और खबरदार जो आइन्दा इस प्रकार की खबर सुनने में आई। हेमे के बजाय कहीं तुम जेल की हवा न खाने लग जाओ। (पठान चुपचाप भीगी बिल्ली सा अपना रास्ता पकड़ता है।)

(सेठजी से) और सेठजी तुम कैसे कह सकते हो कि तुमने हेमे को 500/- रूपये उधार दिये।

सेठजी - नामी है हजूर मारे पां।

नेताजी - क्या सबूत है! क्या गवाह और क्या पता कि यह नामा सही है, क्या तुम्हारे पास कोई सबूत है? कोई गवाह है? तुम कैसे कह सकते हो कि हेमे ने तुमसे 500/- रूपये उधार लिये।

सेठजी - मारे पां तो यो नामो है। यो ही सबूत। यो ही गवा है। मूं तो आज दन तक योइज लेनदेन करतो आयेा हूं। कधी झगड़ा रो काम नी।

नेताजी - तुम आज दिन तक चाहे कुछ भी करते आये, मुझे उससे कोई मतलब नहीं। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूं कि तुम्हारे पास क्या सबूत है कि यह नामा उसी का है और उसने इतने रूपये तुम्हारे से लिये।

सेठजी - रीपा तो अणी लीधा, हो-हो रा पांच कड़क नोट गणी ने मारे हाथूं मैं अने दीधा है। यो बदली जा तो अंडो धरम तो नीं बदल्यो। या कई वात कीधी आप। आपरे मुंडा आगे कई मूं झूठ बोलीर्‌यो हूं।

नेताजी - झूठ! बिल्कुल झूठ, सतरे आना झूठ। मैं सेठों से भलीप्रकार परिचित हूं। उनकी नस-नस से मैं वाकिब हूं, समझे सेठ साहब! किसी और को बनाना।

(हेमा से) हेमे! तुमने इतने रूपये उधार लेकर क्या किया। सच-सच बताना।

हेमा - (हाथ जोड़कर) अन्दाता! एक खेत ओर थोड़ा ढांडाढांडी बेची ने तो मैं दोल्या ने पनायो। वने पनायो ने एक मीना केड़े दादीजी रामसरण वेइग्या। वणारो कर्‌यावर करनो हो। अणी कारणे सेठजी पाऊं ब्याजणा रीपा करज लीधा। मालपा वणाया, हात जात नुती ने दादीजी रो कर्‌यावर परो कीधो।

नेताजी - क्या जरूरत थी दादी का इतना बड़ा करियावर करने की। सात गांव नूतने की। मालपुए बनाने की और कर्जा कर इतने रूपये खर्च करने की!

हेमा - आपणी जातपांत रा नियमई इस्याइज है।

शेष पृष्ठ सात पर

बाजार / समाचार

एबीबी द्वारा 1.8GWh से अधिक ऊर्जा बचाने में वंडर सीमेंट की सहायता

उदयपुर (वि.)। वंडर सीमेंट ने चित्तौड़गढ़ में अपने विनिर्माण संयंत्र में ऊर्जा की बचत के लिये एबीबी के ACS880 बेस्ड एसपीआरएस सॉल्यूशन को लगाया था। इस संयंत्र में तीन प्रोडक्शन लाइंस हैं और इसकी क्लिंकर की उत्पादन क्षमता 8 मिलियन टन सालाना (एमटीपीए) है।

एबीबी इंडिया में मोशन बिजनेस एरिया के प्रेसिडेंट संजीव अरोड़ा ने कहा कि सीमेंट के उत्पादन की प्रक्रिया जटिल होती है और कंपनियां हाई स्टार्टिंग टॉर्क पाने और प्रक्रिया की जरूरतें पूरी करने के लिये आमतौर पर बड़ी स्लिप रिंग इंडक्शन मोटर्स का सहारा लेती हैं। पारंपरिक विधि में बाहरी रोटर रेजिस्टर्स का इस्तेमाल होता है और प्रतिरोधी ऊष्मा के अपव्यय के रूप में ऊर्जा की बड़ी हानि होती है। एबीबी का ACS880बेस्ड एसपीआरएस स्लिप रिंग मोटर्स की गति को नियंत्रित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और ऊर्जा में उल्लेखनीय बचत करता है। इस्तेमाल हुए और संरक्षित किलोवाट-आवर्स, CO2 में कमी और धन की बचत के साथ बिल्ट-इन एनर्जी कैल्कुलेटर्स विनिर्माण प्रक्रिया को इष्टतम बनाने में ग्राहक की मदद करते हैं, ताकि ऊर्जा का सक्षम उपयोग सुनिश्चित हो। एनर्जी ऑप्टिमाइजर मोड प्रति एम्पीयर अधिकतम टॉर्क सुनिश्चित करता है, जिससे आपूर्ति में लगने वाली ऊर्जा कम होती है।

प्रोपेल्ड ने जुटाई 262 करोड़ की राशि

उदयपुर (वि.)। शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने वाले फिनटेक प्लेटफॉर्म प्रोपेल्ड ने वेस्टब्रिज कैपिटल के नेतृत्व में सीरीज़ बी फंडिंग में 262 करोड़ रुपये की राशि जुटाई है। इस राउण्ड में मौजूदा निवेशक- स्टेलेरिस वेंचर

पार्टनर्स और इंडिया क्वशन्ट भी शामिल रहे। वर्ष 2017 में आईआईटी मद्रास के पूर्व छात्रों बिभुप्रसाद दास, विक्टर सेनापति और बृजेश समान्तरे द्वारा स्थापित प्रोपेल्ड ने 500 से अधिक शिक्षा संस्थानों के साथ साझेदारी की है और वर्तमान में इसने 600 करोड़ रूपये सालाना ऋण वितरण की रनरेट दर्ज की है।

प्रोपेल्ड के सह-संस्थापक एवं सीईओ बिभुप्रसाद दास ने कहा कि हम उन छात्रों की पढ़ाई के सपने को साकार करने में सफल रहे हैं जिन्हें पारम्परिक वित्तीय संस्थानों से आर्थिक सहायता नहीं मिल पाती। अब तक हमें अपने साझेदारों से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली है, जो हमारे बिज़नेस मॉडल और बाज़ार में मौजूद अवसरों में हमारे भरोसे को और मजबूत बनाती है। प्रोपेल्ड के सह-संस्थापक बृजेश समांतरे ने कहा कि हम देशभर में छात्रों को ऋण प्रोडक्ट उपलब्ध कराकर सकल नामांकन अनुपात बढ़ाना चाहते हैं और शिक्षा क्षेत्र में फाइनैंसिंग की पहुंच को बढ़ाना चाहते हैं, जिसकी कमी लम्बे समय से इस क्षेत्र में महसूस की जा रही है। मोशन एजुकेशन प्रा. लि. के एमडी नितिन विजय ने कहा कि मोशन एजुकेशन हमेशा से उन छात्रों को सहयोग प्रदान करता रहा है जिन्हें अपनी पढ़ाई के लिए आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और प्रोपेल्ड इसमें बेहद मददगार साबित हुआ है।

रेयर पोस्ट कोविड ब्रेन स्ट्रोक का सफल इलाज

उदयपुर (वि.)। साल 2019 में आए घातक कोरोनावायरस ने देश और दुनिया के लोगों के शरीर में बहुत सी बीमारियों को जन्म दिया जिसमें से कोविड से ठीक होने के बाद भी मरीज के शरीर के किसी हिस्से में स्ट्रोक

होना आम माना गया। पारस जेके हॉस्पिटल में पोस्ट कोविड रक्तस्रावी (हेमरैजिक) स्ट्रोक का एक रेयर केस आया। रक्तस्रावी स्ट्रोक तब होता है जब रक्त वाहिका मस्तिष्क के अंदर फट जाती है और मस्तिष्क के टिशूज को खून से ढक देती है। इस रेयर केस का इलाज पारस जेके अस्पताल के चिकित्सकों ने सफलतापूर्वक कर कामयाबी हासिल की है।

पारस जेके हॉस्पिटल, उदयपुर के सीनियर कंसलटेंट ऑफ न्यूरोलॉजी एंड इंटरवेशनल न्यूरोलॉजी डॉ. तरुण माथुर ने बताया कि 35 वर्षीय महिला स्पीच डिस्टरबेंस (बोलने में दिक्कत) और फेशियल वीकनेस (चेहरे पर सुन्नता) की परेशानी के चलते पारस जेके अस्पताल के इमरजेंसी में पहुंची। यहां डॉक्टरों ने उनकी एमआरआई, ब्रेन एंजियोग्राफी और डीएसए जांच की लेकिन जांचों में कुछ नहीं आया। ब्लड के सारे टेस्ट भी नॉर्मल आए। फिर पता चला कि मरीज को 15 दिन पहले कोविड हुआ था जिससे पोस्ट कोविड-19 इंटरसेरीब्रल हेमोरेज (आईसीएच) की परेशानी हुई है। आमतौर इंटरसेरीब्रल हेमोरेज (आईसीएच) हाइपरटेंशन के कारण दिमाग की नसों के फट जाने के बाद खून के बाहर निकलने से स्ट्रोक होता है. लेकिन पोस्ट कोविड में ऐसे मामले बहुत रेयर और खतरनाक है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मरीज का सफलतापूर्वक इलाज किया गया। इलाज के बाद मरीज स्वस्थ है और उसे डिस्चार्ज कर दिया गया है।

कल्लाजी का रूद्रावतार रूप में श्रृंगार

उदयपुर (वि.)। शिवरात्रि के पावन पर्व पर सेक्टर 14 स्थित काली कल्याण धाम में लोकदेवता कल्लाजी बावजी को भगवान शिव के रूद्र अवतार रूप में श्रृंगारित किया गया। सैकड़ों लोगों ने कल्लाजी के रूद्र रूप के दर्शन किये। गादीपति हेमन्त जोशी ने महारूद्राभिषेक और आरती की।

सूक्ष्म शिल्पकार चितौड़ा सम्मानित

उदयपुर (वि.)। शिल्पकार चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा को माइक्रो

बाइंडिंग बुक्स कलेक्शन के लिए ग्रेट विनर वर्ल्ड रेकॉर्ड ने प्रमाण पत्र जारी किया है। संस्था के प्रशासक डॉ. इंद्रजीत मोरे ने चित्तौड़ा की मिनी काइट के साथ विभिन्न सूक्ष्म कृतियों के कलेक्शन की सराहना करते हुए कलाकार को प्रमाण पत्र, बैच, मोमेन्टों व मैडल प्रदान किया है। संस्था द्वारा भिजवाया गया यह प्रमाण पत्र संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट ने चित्तौड़ा को प्रदान किया।

'ऊंची उड़ान' कार्यक्रम वंचितों के लिए वरदान बना

उदयपुर (वि.)। हिन्दुस्तान जिंक का शैक्षिक कार्यक्रम 'ऊंची उड़ान' वंचित छात्राओं के लिए वरदान साबित हुआ है। इस कार्यक्रम में वंचित परिवारों और हिन्दुस्तान जिंक के परिचालन वाले ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च प्रदर्शन वाले छात्रों को चार वर्षीय आवासीय कोचिंग कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षित किया जाता है। ऊंची उड़ान अब तक छह बैचों में 184 से अधिक छात्रों को छलांग लगाने और देश भर के आईआईटी, एनआईटी और अन्य टॉप इंजीनियरिंग संस्थानों में 100 प्रतिशत सफलता के साथ प्लेसमेंट हासिल करने में सहायता करने में सक्षम हुआ है। यह प्रयास इस वर्ष 134 छात्रों को तैयार कर रही है। 26 छात्रों के एक बैच में नवीं से बारहवीं पास आउट ने आईआईटी में 1, एनआईटी में 1, जोधपुर के एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज में 9 तथा शेष ने देश भर के शीर्ष प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेजों में दाखिला लिया है। यह कार्यक्रम रेजोनेंस एडुवेंचर्स प्रा. लि. और विद्या भवन सोसायटी के सहयोग से छात्रों को जेईई के लिए लिए तैयार करता है।

डॉ. घनश्यामसिंह परिहार का निधन

उदयपुर (वि.)। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. घनश्यामसिंह परिहार (51) का 21 फरवरी को असामयिक निधन हो गया। कुलपति प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि विद्यापीठ ने निष्ठावान, कर्तव्यनिष्ठ व ईमानदार कार्यकर्ता खो दिया जिसकी आने वाले समय में पूर्ति की जानी असंभव है। वे अपनी बोलचाल से हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर देते थे। विद्यापीठ की 26 वर्ष की सेवा के दौरान उन्होंने पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ कार्य किया। वे मृदुभाषी, हंसमुख, मिलनसार एवं सभी के

हृदय सम्राट थे। वे सभी के सुख-दुख में सदा साथ खड़े नजर आते थे।

इधर प्रतिपक्ष नेता गुलाब चंद कटारिया ने डॉ. परिहार के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी ने एक श्रेष्ठ कार्यकर्ता को खो दिया है जिसकी पूर्ति असंभव है। जिलाध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली, सांसद अर्जुनलाल मीणा, ग्रामीण विधायक फुलसिंह मीणा, महामंत्री किरण जैन, दीपक बोल्या, प्रमोद सामर, प्रेमसिंह शक्तावत, मिडिया प्रभारी चंचल अग्रवाल, कृष्णकांत कुमावत ने भी परिहार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

नेक्सटेन्ट डिवाइस प्लेसमेंट कर मरीज को दिया नया जीवन

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के पेसिफिक सेन्टर ऑफ न्यूरो साइन्सेस में चिकित्सकों ने ब्रेन हेमरेज से पीड़ित मरीज की धमनी में दक्षिणी राजस्थान की पहली नेक्सटेन्ट डिवाइस लगाकर उसे नया जीवनदान दिया है। इस प्लेसमेंट में मस्तिष्क एवं लकवा रोग विशेषज्ञ डॉ. अतुलाभ वाजपेयी, डॉ. रमाकांत, डॉ. अखिलेश, डॉ. आलोक, डॉ. चंद्रशेखर एव चिन्तन का सहयोग रहा।

डॉ. अतुलाभ वाजपेयी ने बताया कि गत दिनों 62 वर्षीय महिला को मस्तिष्क में तेज दर्द, उल्टी, घबराहट के चलते परिजन पेसिफिक सेन्टर ऑफन्यूरो साइन्सेस लाया गया। जांच में रोगी के मस्तिष्क में ब्रेन हेमरेज का पता चला। मस्तिष्क की ऐन्जियोग्रॉफी में पाये गये चोड़े मुँह (वाइडनेक ऐन्यूरिज्म) के तिकोने गुब्बारे को फटने से रोकने के लिए उसे बंद किया जाना आवश्यक था। इस पर नवीनतम तकनीक नेक्सटेन्ट डिवाइस द्वारा गुब्बारे को बंद किया जो कि दक्षिण राजस्थान में प्रथम बार किया गया।

पीएमसीएच के चेयरमैन राहुल अग्रवाल ने कहा कि बेहतर इलाज के लिए बेहतर इक्यूपमेंट, तकनीक और विश्वसनीय टीम महत्वपूर्ण होती है, जो कि पेसिफिक हॉस्पिटल में उपलब्ध है। मरीज अब पूरी तरह से स्वस्थ्य है।

महाराणा भूपालसिंह ने हर वर्ग के उत्थान के लिए किया कार्य : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर (वि.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से महाराणा भूपालसिंह की 138वीं जयंती पर कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत, रजिस्ट्रार डॉ. हेमशंकर दाधीच, डॉ. हरीश शर्मा, बीएल सोनी, डॉ. सपना श्रीमाली ने पुष्पांजलि अर्पित की। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि महाराणा भूपालसिंह ने आजादी के पूर्व हर वर्ग के उत्थान के लिए हर संभव सहयोग किया। विलीनिकरण के दौरान मेवाड़ में आये हर व्यक्ति को अपने यहां शरण दी। सर्वप्रथम रियासती एकीकरण के पक्षकार महाराणा भूपालसिंह थे। उनके इस सहयोग के लिए उनको पूरे भारत के एकीकरण के दौरान मार्गप्रदर्शक की छवि के रूप

में पेश किया गया। महिला शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक सरोकार में उनके उल्लेखनीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। किसानों, गरीब लोगों को साहूकारों के चंगुल से छुड़वाने के लिए राज्य की ओर से महलों में दुकानें खुलवाईं। युवाओं को उनकी जीवनी से सीख लेने की जरूरत है। इस अवसर पर उदयभानसिंह राठौड़, राजू शर्मा, डॉ. कुलशेखर व्यास, कृष्णकांत कुमावत, जितेन्द्रसिंह राठौड़, लहरनाथ, सावरियालाल धाकड़ भी उपस्थित थे।

तुलसी ने की मीरां.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

तुलसीदास-प्रताप की मुलाकात के इस प्रसंग का इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि तुलसीदास ने मानस के पूर्व भरत चरित की रचना की थी। बाद में जब उन्होंने सम्पूर्ण रामचरित को भाषाबद्ध करने का निश्चय किया तो अयोध्याकाण्ड के रूप में यही भरत चरित उसका दूसरा अध्याय बना जिसे विद्वानों ने मानस के रचना-प्रसंग में सर्वाधिक सुंदर तथा काव्यशास्त्रीय कसौटी पर खरा उतरने वाला माना।

हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार ओंकारश्री ने बताया कि 1977 के उनके कोलकता प्रवास के दौरान रामकथा के महान मनीषी रामकिंकर ने भी तुलसी-प्रताप के मिलन को स्वीकार किया था। इस प्रसंग को कुछ विद्धानों ने लिखा भी है। तुलसी ने तब उदयपुर से बारह किलोमीटर दूर देबारी के पास जिस कुटिया में विश्राम किया वह 'तुलसी कोटड़ी' नाम से जानी गई। इससे पूर्व मेवाड़ की राजरानी मीरांबाई को तुलसी द्वारा 'जाके प्रिय न राम वैदेही' शीर्षक पत्र-पद लिखने का प्रसंग प्रसिद्ध है ही।

मीरां ने कोल्हापुर में शिवाजी और जीजाबाई, काशी में कबीर, रसखान तथा रामानन्द, पंढ़रपुर में गुरु रामदास, वृन्दावन में जीव गोस्वामी, वीरपुर में जलाराम, गिरनार में नरसी मेहता तथा अनेक संतों-भक्तों से भेंट की। सन् 1985 में मेरी पहली यात्रा 16 से 30 मई तक हुई। इसमें हमने द्वारिका, हरसिद्धि, सोमनाथ, गिरनार, वीरपुर, डाकोर, मथुरा तथा चित्तौड़ की यात्रा कर जहां-जहां मीरां गईं, वहां के धर्मस्थलों का भ्रमण किया।

करज रो.....

(पृष्ठ पांच का शेष)

नेताजी - जाति-पांति के ऐसे कोई नियम नहीं। जात-पांत यह नहीं सिखाता कि पास में कुछ न हो तो भी कर्ज लाकर इतना बड़ा भोज किया जाय। यदि कोई जाति इस तरह से कहती है तो उस जाति में रहने की कोई आवश्यकता नहीं। बनाने वालों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए इस प्रकार के नियम बना डाले। यदि तुम्हें जाति से बाहर भी निकलना पड़ता तो तुम्हें निकल जाना चाहिये था। उससे कम-से-कम तुम्हारी ऐसी हालत तो नहीं होती। तुम महीने भर बाद क्या सात जनम तक इतना करजा नहीं चुका सकते।

(सेठजी से) और सेठजी! आप तो समझदार थे न। आपको एक मुश्त इतनी बड़ी रकम ब्याज पर नहीं देनी थी। इतना बढ़ा चढ़ा ब्याज और ब्याज ऊपर फिर ब्याज। जानते हो सरकार क्या करने जा रही है।

सेठजी - पतो नीं सा।

नेताजी - तो सुन लो कान खोलकर के। ब्याज देने वालों के पास लाइसेंस होगा। व्यवस्थित हिसाब होगा। उस हिसाब की समय-समय पर सरकारी जांच होगी। ब्याज की दर निश्चत होगी और ब्याज को इतनी बड़ी रकम किसी एक को नहीं दे पाओगे। समझे न सेठ सा. (हंसकर) समझ में क्यों नहीं आता! वैसे ही आपकी तोंद दिन दूनी बढ़ती जा रही है आखिर कब तक इसे और ज्यादा बढ़ाते रहोंगे। बिचारे निर्धन निर्धन बनते जा रहे हैं और तोंद वाले साहब..... (हा..हा..हा..हा..)

(हेमे से) हेमा...

हेमा - फरमावो हजूर।

नेताजी - तुम जानते हो सरकार आजकल किसानों को हर तरह से आर्थिक सहायता दे रही है। सस्ता खाद, सस्ते और उत्तम दर्जे के बीज, खेती के अन्य औजार, कुआ खुदवाई के तथा खेती सम्बन्धी अन्य अवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह ऋण देती है। सुना है न!

हेमा - नीं हुण्यो होकम।

नेताजी - कैसा पागल है सेठजी! अरे मैं जो कह रहा हूं वो बात भी नहीं सुनी।

हेमा - या वात तो हुणी होकम।

नेताजी - तो फिर कैसे कह रहे हो कि नहीं सुणी। (नेताजी, सेठजी और हेमा तीनों हंसते हैं।)

नेताजी - हां तो सुन लो ध्यान लगाकर फिर से।

हेमा - फरमावो होकम।

नेताजी - तुम्हें सेठजी के रूपयों का जितना जल्दी हो सके चुकारा करना है और इसके लिए अच्छा तो यही होगा कि तुम्हें सरकार द्वारा जगह-जगह जो सरकारी समितियें या अन्य संस्थाएं खोली गई हैं वहां से कुछ रकम मिल जाय जिससे तुम जल्दी ही सेठजी के रूपयों की चिंता से मुक्त हो सको। कल आना मेरे घर। मैं तुम्हें ऋण दिलाऊंगा।

हेमा - हो हुकूम।

नेताजी - (सेठजी) तो चलें सेठजी।

सेठजी - हां चालो सा।

नेताजी - (हेमा से) अच्छा भाई, आनंद से रहना। किसी बात की चिंता न करना।

हेमा - मेरबानी राखजो होकम।

सेठजी से - पधारो सेठजी।

सेठजी - हां भाई, आछो रीजे। (दोनों का प्रस्थान)

हेमा - (आपेआप) नेताजी तो आज है ने काले नीं पण वोराजी-सेठजी रो घराणो पीड्यां सूं पालतो आइर्यो है। दख-सख में यांरोई आसरो। जलम-मरण ब्याव-सादी रा सगराई काज यांरेई भरोसे ने विसवास माथे चाले। करजो तो मर्यां पाछेई चालतो रेवे पण जातपांत री साख ने कदेई बट्टो नी लागवा दीधो। सदाई सवाया राख्या। अस्या सबां रा रूखांला रामजी ज्यूं राखे त्यूंई रेवां पण सेठां सदाई जीवता रे। -(समाप्त)

बेहतर जल प्रबंधन के लिए नई तकनीक जरूरी : मालवीया

उदयपुर (वि.)। राष्ट्रीय जल विज्ञान परियोजना के तत्वावधान में अन्तर्राज्यीय कार्यशाला का आयोजन जल संसाधन मंत्री महेंद्रजीतसिंह मालवीया व भाखड़ा व्यास मैनेजमेंट बोर्ड के अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव के आतिथ्य में हुआ।

मालवीया ने राष्ट्र निर्माण के योगदान में जल संसाधन की महती भूमिका व इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अभियंताओं के योगदान को अति महत्वपूर्ण बताते हुए आह्वान किया कि अभियंताओं को नवीनतम तकनीकों का उपयोग कर जल संसाधन के प्रबंधन में और अधिक दक्षता से कार्य करना चाहिये। मालवीया ने भाखड़ा व्यास मैनेजमेंट बोर्ड अध्यक्ष से आग्रह किया कि राजस्थान की विषम परिस्थितियों को देखते हुए प्रदेश को अधिकाधिक जल उपलब्ध कराया जाए।

मालवीया ने मुख्यमंत्री द्वारा पृथक से कृषि बजट प्रस्तुत करने के कदम को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि राजस्थान देश का पहला राज्य है जिसने कृषकों के हित के लिए इस प्रकार से बजट प्रस्तुत किया है। उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी अंचल की जीवन रेखा माही के तंत्र के सुदृढ़ीकरण के लिए 40 वर्षों में पहली बार 600 करोड़ रुपये देने की घोषणा के लिए भी मुख्यमंत्री का आभार जताया।

संजय श्रीवास्तव ने कहा कि बीबीएमबी भागीदार राज्यों के मध्य जल वितरण के प्रति सदैव ही संवेदनशील रहता है किन्तु राज्यों को जल उपयोगिता के क्रम में जल का बेहतर प्रबंधन कर मितव्ययता से जल उपयोग करना वर्तमान में आवश्यक है। गुण नियंत्रण एवं सतर्कता के मुख्य अभियंता विनोद चौधरी ने राजस्थान में एनएचपी के अंतर्गत विभिन्न बांधों, नहरों व अन्य स्थानों पर वर्षा मापक यंत्र तथा नदियों में बहाव क्षमता एवं जलस्तर मापक यंत्रों के लगाए जाने के क्रम में विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि नवीन ऑटोमेशन प्रणाली से जहां एक ओर जल प्रबंधन में प्रभावी नियंत्रण रखा जा सकता है वहीं दूसरी ओर वर्षा काल में नदियों के जलस्तर, अत्यधिक वर्षा आदि के आंकड़े तत्परता से राज्य स्तर पर नियंत्रण कक्ष में प्राप्त हो सकते हैं। कार्यशाला में पंजाब, हरियाणा, बी.बी.एम.बी. के द्वारा एन. एच. पी. के अंतर्गत प्रस्तुतीकरण किया गया ।

अतिरिक्त मुख्य अभियंता भुवन भास्कर ने केन्द्रीय जल आयोग, राष्ट्रीय जल विज्ञान परिषद, अन्य राज्यों से आए वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत किया। एनएचपी दिल्ली के वरिष्ठ संयुक्त आयुक्त राकेश कश्यप ने एन. एच. पी. की वर्तमान में संचालित तथा भविष्य में प्रस्तावित योजनाओं की जानकारी दी।

पं. चतुरलाल की स्मृति में 'स्मृतियां'

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर में जन्मे प्रख्यात तबला वादक पं. चतुरलाल की स्मृति में पं. चतुरलाल मेमोरियल सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा हिन्दुस्तान

जिंक के सहयोग से 5 मार्च को भारतीय लोककला मण्डल में शाम 7 बजे 'स्मृतियां' कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा।

पं. चतुरलाल के पुत्र चरनजीत ने बताया कि कार्यक्रम में युवा संगीतज्ञ और कलाकार श्रुति और प्रांशु चतुरलाल की नवीन प्रस्तुति इस बार 'स्मृतियां' में संगीतप्रेमियों के मन को मोह लेगी। रेगिस्तान के तहत् राजस्थानी लोकसंगीत और पर्कशन की जुगलबंदी का उद्धेश्य जीवन में सकारात्मकता का संदेश देते हुए खुशी, प्रेम, हंसी और सद्भावना को अपनाने के लिये प्रेरित करना है। 'रेगिस्तान' की प्रस्तुति पर्कशन पर प्रांशु चतुरलाल, राजस्थानी लोकसंगीत पर सवाई खान, सारंगी और कीबोर्ड पर लोक ताल लतीफ खान देंगे। दूसरी प्रस्तुति में लोकगायिका मालिनी अवस्थी और पं. रोनू मजूमदार की बांसूरी पर पहलीबार होने वाली जुगलबंदी श्रोताओं का मंत्रमुग्ध कर देगी।

पं. चतुरलाल की पुत्रवधू श्रीमती मीतालाल ने बताया कि उदयपुर में जन्मे पं. चतुरलाल की 6 वर्ष की उम्र से ही तबले की तालीम प्रारंभ हो गई। उनके पिता नाथूप्रसाद को मेवाड़ महाराणा की ओर से आजीविका के लिये कुछ भूमि मिली हुई थी। पं. चतुरलाल उदयपुर के उस्ताद हाफीज मियां के शिष्य बने। पं. चतुरलाल पहले ऐसे तबला वादक थे जिन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत को विदेशों में इतना लोकप्रिय किया कि वहां के लोगों ने उसे अद्भुत संगीत कहा।

कार्यक्रम के सह-प्रायोजक राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लि., पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन, नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन लि., पावरग्रिड कॉर्पोरेशन लि., भारतीय लोककला मंडल, होटल रमाडा तथा होटल प्राइड हैं।

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 28.2.2022

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

राजस्थानी लोककलाओं का सर्वेक्षण (6)

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

रूठेड़ा भरतार को ख्याल :

म्हारा रूठेड़ा भरतार मनावन आई रे।। टेर।।
सुरसुत माय सारदा सुमरूं गजानंद ने धाऊं ।
देवीलाल उसताज हमारा जिन कूं सीस नमाऊं ।। 1।।
हाथ जोड़ ठाड़ी रहून म्हूं अरज करूं सो बार।
आज मनाऊं थने जो या तीज बड़ो तेवार ।। 2।।
ना जानू किन भरमाया जो म्हासूं डोड़ा बोले।
कपट करे मन ऊंचो राखे मारूजी मन ढोले।। 3।।
आठ पेहर चोसठ घड़ी जो म्हूं मम हाथां में राखूं।
घड़ी-घड़ी की रात दन म्हूं भर-भर खाऊ तमाखू।। 4।।
करे लड़ाई झूठा बोले म्हने लगावे दोस।
पीठ फेरने सोवे रातने करे न कामो रोस।। 5।।
म्हारो रूसरयो भरसार कणी भरमायो रे॥ टेर।।
म्हें तो करां दूसरो व्याव परत नहीं बोलांजी॥ टेर।।
सुरसुत माय सारदा सुमरूं गुनपत लागूं पाय।
देवीलाल उसताज हमारा जिन्हें केसरीनाथजी साय।। 1।।
कून थांनू भरमाया मानू साची कोनी बात।
म्हांसू आप क्यूं लीदो रूसनो म्हूं तरिया की जात।। 2।।
करां दूसरो व्याव आपसूं म्हारो मन नहीं राजी।।
पेली म्हारो कयो न मान्यो जाती पीयर भाजी।। 3।।
मां बाप के घणी लाड़ली घनो जो राख्यो मान।
बालक छी समझी नहीं जो म्हें नाजुकड़ी नादान।। 4।।
ऊबी-ऊबी मान कचोक में क्यां ने तापड़ा तोड़े।
पेली म्हारो कयो न मान्यो अब कूं अंग मरोड़े।। 5।।
माफ करो तगसीदी पागली म्हूंछू आपरी प्यारी।
दया बिचारो म्हेल पधारो करूं सेजरी त्यारी॥ ।। 6।।
म्हें नहीं आवां म्हेल में जो प्यारी करां दूसरो ब्याव।
थे तो म्हांकी पीठ चुरावो अबे आगे नी आव।। 7॥
इस्या बोल मत बोलो साजी इसड़ा किन भरमाया।
राते डरफी सूती डागले थे पाछा सूं आया॥ 8॥
म्हू नी मानू एक बात ने म्हने सांच नी प्रावे।
जावो पीयर आपके जो तू मत लोग हँसावे ।। 9।।
अंतर कपटी छे म्हारो सायबो सेजां नहीं आवे।। टेर।।
प्रीत कपट रे वेर छे मत राखो मरदो ।। टेर।।
अंतर कपटी सायबो जो नहीं आवे म्हारी सेज।
सोकड़रा भरमाया म्हासूं नत उठ बोले तेज।। 1।।
प्रीत कपट रे वेर छे नै प्यारी पीड़दो थें मत राखो।
म्हूं तो थांने सैज बोलियो झूठ कई थें भाखो ॥ 2॥

गवरी-परचे और प्रदर्शन :

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हम सबका ध्यान स्वत: ही लोकानुरंजन के साधनों के प्रति आकृष्ट हुआ है। शासन ने भी इसमें विशेष दिलचस्पी दिखाई। निश्चय ही इससे इन साधनों का

उन्नयन एवं संरक्षण हुआ परन्तु लोककलाओं के ऐसे कलात्मक एवं सांस्कृतिक कल्याणकारी पक्षों की कहीं-कहीं उपेक्षा भी हुई। उदाहरण के लिए भीलों के सुप्रसिद्ध गवरी नाट्य को लिया जा सकता है।

शिव और भस्मासुर के कथानक पर संघटित यह आदि

लोकनाट्य भारत का एकमात्र नाट्य है जो प्रदर्शकों के विशिष्ट समूह के साथ नाना स्वांग स्वरूपों में दिनभर प्रात: 8 बजे से लेकर सायं 5 बजे तक विविध गांवों में प्रदर्शित किया जाता है।

इसके महत्त्व-बोध से अपरिचित रहने के कारण शासन ने अब तक इसे भील जीवन की एक हीन और असांस्कृतिक प्रवृत्ति माना है। फलत: इसे बंद करने के लिए शासन की ओर से अधिनियमित कार्य प्रारम्भ किये गये हैं।

आदिवासी समाज सुधारक मंडल तथा पंचों की ओर से ऐसे आदेश प्रसारित किये गये हैं जिसके अनुसार इसका अभिनय करने वालों को दंडित करने की उचित व्यवस्था की गई है। इस सम्बन्ध में लेखक को दो परचे हाथ लगे हैं जो यहां प्रकाशित किये जा रहे हैं।

परचा पहला :

गांव गिरवा के गमेती भाइयों! आपको यह तो मालूम ही था कि जिस समय आयड़ गांव के गंगू पर गमेती जाति की बैठक रखी थी उसमें गिरवा व अन्य गमेती भाइयों ने यह तय किया कि कांग्रेस सरकार हमारे सामाजिक जीवन को तन मन धन द्वारा हमारा स्तर ऊंचा उठा रही है और हर तरह से हमारी सहायता व मदद कर रही है पर हम लोग अभी गहरी नींद में सोये हुए हैं। न हमें अभी तक अच्छा जीवन बिताने का ढग मालूम है। हमारे दिमागों में प्राचीन बुद्धि पड़ी हुई है और हमारा सारा समय यों ही बीत जाता है।

इस बात को सरकार ने ध्यान में रखकर हमारी भलाई के लिए गवरी नृत्य बंद कर दिया। इसकी हमें खुशी है। क्योंकि हम महिने भर इधर उधर मारे मारे न फिर कर एक जगह बैठकर हमेशा के काम में लगे रहें । इस विषय पर समस्त गमेती भाइयों ने भी बैठक बिठाकर यह तय किया कि गवरी नहीं लेंगे।

पर पंचों की बिना आज्ञा से गोर्द्धनविलास वाली देवाली में गमेती भाइयों ने गवरी ली। यह हमारी गमेती जाति के लिये शर्म की बात है। हम गिरवा गाँव के समस्त गमेती भाई सभी भाइयों से यह प्रार्थना करते हैं कि इस बात को ध्यान में रखते हुए उनका जाति व्यवहार लेन, देन, साड़ी, कापड़ा, पहरावणी आदि बंद किये जाय।

अगर कोई जातिभाई पहरावणी व लेन देन करता हुआ हमारी नजर में या दूसरों की नजर में दिखाई दिया तो उस पर 500 रुपया जुर्माना और 12 वर्ष तक उसका जाति व्यवहार बंद रहेगा।

दिनांक 10-6-1965 को यह परचा समस्त पंच गिरवा की ओर से प्रसारित किया गया था।

परचा दूसरा :

दिनांक 13-9-66 सम्वत् 2023 भादवा विद 14 मंगलवार को आदिवासी समाज सुधार मंडल की कमेटी गाम मद मादड़ी मंदर पर बैठकर बै कर दी सो साबित रहे।

तेहसील गिरवा रा पंच मिलकर तय कर दिया कि आपने जो कानून बनाया जो कानून गाम देबारी, गाम तीतरड़ी और गाम टेकरी इन तीनों गामवाला भंग कर दिया जो मां सब पंच मिलकर यह ते कर दिया है कि जाति से खिलाफ करदिया है जो सही है। बेटी, बेन, सगाई, सगा सम्बन्धी का आना जाना और चलम साफी पामणा आना जाना बंद है। अनारा हिसाब नीचला गिरवा पटी ऊपला गिरवा पटी बड़गांव पटी मगरा पटी कुराबड़ पटी मेवाड़ पटी नाथद्वारा इन सात ही पटी रा पंच मिलेगा जदी हिसाब किया जायगा।

जब तक नी मिले तब तक वह जाति से खिलाफ है जो नी मानेगा तो जात उचित फैसला करेगा। दण्ड रे अलावा नी मानेला तो श्री केसरियाजी व झामेश्वरजी महादेव व सुरियेजी री आन। आन सब जानवा रे लिये।

यह परचा आदिवासी समाज सुधार मंडल की कमेटी की ओर से प्रचारित किया गया था। शासन का दायित्व है कि सामाजिक स्वस्थ मनोरंजन की प्राप्ति हेतु लोकानुरंजन के ऐसे साधनों को बढावा देकर उन्हें संरक्षण प्रदान करें।

- क्रमश :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।